उनसे इश्क़ करके

(साझा काव्य संकलन)

अमित पाठक शाकद्वीपी

Amit Pathak's
साहित्य
संगम बुक्स

उनसे इश्क़ करके

(साझा काव्य संकलन)

संकलक

अमित पाठक शाकद्वीपी

साहित्य संगम बुक्स

उनसे इश्क़ करके

- प्रकाशन : साहित्य संगम बुक्स।
- संकलक : अमित पाठक शाकद्वीपी।
- रूप सज्जा : अमित पाठक शाकद्वीपी।
- मुद्रण : नई दिल्ली।
- संस्करण : द्वितीय, 2025।
- ISBN : 978-81-973263-6-3।

- © सर्वाधिकार सुरक्षित।

मूल्य : ३९९/–

साहित्य संगम बुक्स

आभार

प्रिय पाठक,
आपके समक्ष यह साझा संकलन प्रस्तुत करते हुए मेरा हृदय कृतज्ञता से आप्लावित है। इस कृति को साकार रूप देने में जिन-जिन महानुभावों ने अपने योगदान की सुगंध बिखेरी है, उनके प्रति मैं अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस यात्रा में सहयोगी रहे सभी सृजनशील मित्रों, प्रेरणास्त्रोत विद्वानों, तथा मार्गदर्शन करने वाले गुरुजनों के प्रति मेरा नमन। आपकी अंतर्दृष्टि, उत्साह और सहृदयता ने इस संकलन को एक सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धि में परिवर्तित किया है।

मेरे प्रिय परिजनों और आत्मीयजनों के प्रति भी मेरा हृदयतल से आभार, जिनकी अप्रतिम प्रेरणा और स्नेह ने मुझे इस रचना को पूर्णता तक पहुँचाने का साहस और सामर्थ्य दिया।

पाठकगण, आप सभी की उत्सुकता, रुचि, और समर्थन इस प्रयास की आत्मा है। मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ कि आपने इसे पढ़ने और सराहने का समय निकाला।

यह साझा संकलन केवल एक नहीं, बल्कि सामूहिक श्रम, विचारों और भावनाओं की परिणति है।आशा करता हूँ कि यह आपके हृदय को छूने और आपके विचारशीलता को प्रेरित करने में सफल हो।

आप सभी का हार्दिक आभार।

अमित पाठक शाकद्वीपी
संकलक

भारत सरकार
Government of India
Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises

UDYAM REGISTRATION CERTIFICATE

- Udyam Reg. No. : UDYAM-JH-01-0024515
- Date of Udyam Reg. : 03/06/2023
- Name of Enterprise : SAHITYA SANGAM
- Social Category of Enterpreneur : General
- Type of Enterprise : Micro (During FY 2021-22 & Based on FY 2022-23)

NAME OF UNIT(S)
Sahitya Sangam Books
(Owned by : Amit Pathak)

OFFICAL ADDRESS OF ENTERPRISE
Flat/Door/Block No. 1004
Name of Premises/ Building : Staff Quarter Dhori
Village/Town : Phusro Block : Bermo
Road/Street/Lane : Near Dhori Pani Tanki City : Bokaro
State : JHARKHAND District : BOKARO , Pin : 825102
Mobile : 8935857296 Email : sahityasangambooks@gmail.com
Website : www.sahityasangambooks.in

भारत सरकार
Government of India
Goods and Service Tax

REGISTRATION CERTIFICATE

- Registration Number : 20CGKPP7865A1ZF
- Legal Name : Amit Pathak
- Trade Name, if any : Sahitya Sangam Books
- Jurisdictional Office : Tenughat
- Date of issue of Certificate : 11/11/2023

This is a system generated digitally signed Registration Certificate issued based on the approval of application granted on 11/11/2023 by the jurisdictional authority.

अस्वीकरण

यह संकलन विभिन्न लेखकों और कवियों की कल्पनाओं, अनुभवों, और विचारों का संग्रह है। इसमें व्यक्त की गई राय और भावनाएँ पूरी तरह से लेखकों की अपनी हैं और आवश्यक नहीं है कि वे संपादक, प्रकाशक, या अन्य संबंधित व्यक्तियों के दृष्टिकोण या मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हों।

इस पुस्तक में शामिल रचनाएँ साहित्यिक और रचनात्मक उद्देश्य से प्रस्तुत की गई हैं। यदि कोई सामग्री किसी पाठक को असुविधाजनक लगे या उनके विचारों से मेल न खाए, तो यह संयोगवश है और इसका उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह को साहित्यिक दृष्टि से देखें और इसे खुले मन से पढ़ें।

सादर
साहित्य संगम बुक्स

प्रतिलिप्याधिकार

यह काव्य संकलन विभिन्न कवियों की मौलिक रचनाओं का संग्रह है, जो उनकी व्यक्तिगत भावनाओं, विचारों और अनुभवों का प्रतिबिंब हैं। संग्रह में शामिल सभी कविताएँ और सामग्रियों पर संबंधित कवियों और प्रकाशक का पूर्ण बौद्धिक अधिकार सुरक्षित है। इनका किसी भी रूप में पुनरुत्पादन, प्रकाशन, या व्यावसायिक उपयोग बिना लेखकों और प्रकाशक की लिखित अनुमति के सख्त निषिद्ध है। इस संग्रह का संकलन, संपादन, और प्रकाशन का कॉपीराइट साहित्य संगम बुक्स के पास सुरक्षित है। किसी भी प्रकार का अनाधिकृत उपयोग भारतीय कॉपीराइट अधिनियम, 1957 और अन्य प्रासंगिक कानूनों का उल्लंघन माना जाएगा, जिसके लिए कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस संग्रह का उपयोग केवल निजी अध्ययन और साहित्यिक उद्देश्य से करें। यदि किसी भी सामग्री को उद्धृत या संदर्भित करना हो, तो लेखक और पुस्तक को उचित श्रेय देना अनिवार्य है। इस पुस्तक की कोई भी सामग्री व्यक्तिगत अध्ययन, शोध या समीक्षा के उद्देश्य से सीमित उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त कर सकती है, लेकिन व्यावसायिक उपयोग या वितरण के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक है।

इस पुस्तक का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना है। किसी भी सामग्री के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त करने के लिए कृपया नीचे दिए गए संपर्क विवरण पर संपर्क करें।

संपर्क:

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी, फुसरो, बोकारो

झारखंड – 825102

वेबसाईट : www.sahityasangambooks.in

ईमेल : sahityasangambooks2@gmail.com

अनुक्रमणिका

सहयोगी रचनाकार •••••••••••••••••••••••••••••••••••• पृष्ठ संख्या

1. अमित पाठक शाकद्वीपी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 7
2. श्री राज शारदा जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 11
3. श्री दीप सिंह भाटी जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 15
4. श्री राम प्रकाश गहोई जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 19
5. श्री राकेश राज जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 23
6. श्री रमापति मौर्य जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 27
7. श्रीमती सुनीता देवी मौर्य •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 33
8. डॉ. नौशाब सुहैल दतियावी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 37
9. श्रीमती हेमलता साहूकार जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 41
10. श्रीमती शालिनी श्रीवास्तव सनशाइन जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 45
11. श्री बलवंत सिंह राणा जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 49
12. श्रीमती रीना त्रिपाठी जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 53
13. डॉ प्रीति चौबीसा जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 57
14. श्री सुशांत कुमार पाठक जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 61
15. श्रीमती नीलम सिंह जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 64
16. श्री मुन्ना राम मेघवाल जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 68
17. श्रीमती सोनिया सरीन साहिबा जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 72
18. श्रीमती धरती शर्मा धरी जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 76
19. मो. अब्दुल रहमान बाँदवी जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 80
20. सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 84
21. सुश्री मुस्कान जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 88
22. श्री मनोज मंजुल जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 92
23. श्रीमती विभूति सिंह "विख्यात" जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 94
24. श्रीमती कविता सिंह "सृजना" जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 98
25. श्री राकेश कुमार दास जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 102
26. श्रीमती संध्या गुप्ता जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 106
27. श्रीमती सरिता गुप्ता जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 110
28. डॉ बी एल सैनी जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 114
29. श्रीमती हरमिंदर कौर जी •••••••••••••••••••••••••••••••••••• 118

रचनाएँ

अमित पाठक शाकद्वीपी

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्वर्गीय अरविन्द पाठक।**
- **माता का नाम : श्रीमती अनुपमा पाठक।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (प्रतिष्ठा : गणित)।**
- **संप्रति : शिक्षक, लेखक, कवि, प्रकाशक एवं कर्मकांडी ब्राह्मण।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : विगत ३ वर्षों से लेखन में सक्रिय।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. **साँवरे की बंसी।**
2. **शब्दों की महक।**
3. **रंगों की बौछार।**
4. **मातृत्व।**
5. **पिता का साया।**
6. **प्रीत की डोर इत्यादि।**

निवास स्थान

- **शहर : फुसरो ।**
- **जिला : बोकारो।**
- **राज्य : झारखंड।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

प्रियंवदा

काले काले नागिन जैसे,
ये कुंतल के जाल,
देख के उनको वश में रहना,
प्यारे है मोहाल।।

फुदक फुदक कर चलती है,
ज्यों चले मोरनी चाल,
नैन कटारी, तन सुकुमारी,
गोरे गोरे गाल।।

लगे चांदनी उतरी धरा पर,
करके दिव्य श्रृंगार,
अधरन पर मुस्कान सजाया,
बिंदी सजी लीलार।।

कानों में कुंडल झलकाया,
गल मोतियन के हार,
शोभा ऐसी जाय न बरनी,
कोशिश करूँ अपार।।

© अमित पाठक शाकद्वीपी

अमित प्रीति तुमसे

सुना रही घटा सदा,
कथा वही सुधा भरे,
कहा नहीं कभी गया,
भले प्रवाह थे झरे।

मुझे तुझे इसे उसे,
अटूट नेह तुंग से,
उदास नैन बोलते,
अनूप मेह भृंग से।

कहो खता हुई कहाँ,
जले सदा हिया यहाँ,
पुनीत प्रेम की हवा,
सदैव ही बहे जहाँ।

धरा-दिगंत, मेदिनी,
प्रभात को निहारती,
करूं तभी सदा तेरी,
अखंड प्रेम आरती।

© अमित पाठक शाकद्वीपी

सरकार सुन लों मेरी

सरकार सुन लो मेरी,
मेरी प्रीत की कहानी,
तू सांवरा है मेरा,
मैं हूँ तेरी दीवानी।

पनघट पे तुझको तांकु,
तेरी ओर पल पल झांकू,
इस दिल में सुमिर कर,
बस तेरा नाम जापूँ ।

तू श्वास श्वास साजे,
हृदयतल में भी विराजे,
पाकर दरश तुम्हारा,
मन का मयूर नाचे।

समझो मेरी व्यथा को,
इस प्रेम की प्रथा को,
सही जाए न जुदाई,
आंखों से आए पानी,

सरकार सुन लो मेरी,
मेरी प्रीत की कहानी,
तू सांवरा है मेरा,
मैं हूँ तेरी दीवानी।

© अमित पाठक शाकद्वीपी

श्री राज शारदा

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री ओम दत्त।
- माता का नाम : श्रीमती सुमत्या देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : अभियांत्रिकी, एम. बी. ए. (एच. आर. डी.)।
- संप्रति : अभियंता एवं कवि।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : विगत चालीस वर्षों से लेखन में सक्रिय।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. साँवरे की बंसी।
2. सरोकार।
3. अपराजय।
4. काव्यरत्न।
5. प्रहरी।
6. द राइजिंग स्टेप इत्यादि।

निवास स्थान

- शहर : नोएडा।
- जिला : गौतम बुद्ध नगर।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना...

बड़ी छोटी है, संग ए दिल दुनिया
यहाँ रह कर तो जीना मुश्किल है,
जानते हैं तुम, इश्क करते हो,
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना।
जानते हैं तुम इश्क करते हो...

आजमाती है हर तरह ज़िन्दगी,
हर मुसीबत में हौसला रखना,
आफतें हैं हर एक रोज नई,
अलामतें भी संग संग हैं
नफरतों के बीच सदा, सब को जुदा रखना।
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना...

कर्म करने हैं, यहाँ दुनिया में
ध्यान अच्छे बुरे, का भी रखना,
तरह तरह के, लोग मिलते हैं
हो सके तो काम, भला करना।
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना...

अन्त सब का यहीं, है माटी मिलन
वैर भाव फिर, किसी से क्या रखना,
बाद में बात, जो शर्मसार करे
ऐसा फैसला कोई, नहीं करना।
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना...

नाक पतली, कान चौड़े, खुली हुई आंखें
हकीकत पर अपनी पैनी, नज़र रखना,
यहाँ कब क्या हो जाये, पता नहीं
आस पास में हरकत, की खबर रखना.
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना...

दिल के जज़्बात, नाजुक होते हैं
कहीं इन को बचा, बचा रखना,
"राज" ऐसी है, दिल की बीमारी
लग गई तो, सदा दवा करना।

जानते हैं तुम इश्क करते हो,
दिल को अपने ज़रा बड़ा रखना।।

© राज शारदा

बात ही बात में

बात ही बात में कैसे आशिक बने,
कुछ पता न चला एक ही रात में,
चन्द बातें हुई, मुलाकातें हुई
कुछ पता न चला बात ही बात में. ...
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

तेरी मेरी कहानी कब चालू हुई
कुछ पता न चला बात ही बात में,
खेलते कूदते कब बड़े हो गये
कुछ खबर न हुई बात ही बात में.
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

कबसे आशिक बने, कबसे चाहने लगे,
कुछ पता न चला, जग की दौड़ भाग में,
सब कुछ तेरा ही था, कुछ भी मेरा न था
कब हमारा हुया, कुछ पता न चला।
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

कुछ हंसी पल थे हमने गुजारे कभी,
हमको याद आ गये बात ही बात में,
खिज़ाओं में जैसे गिर जाते हैं फूल
ऐसे हम भी हुये पात ही पात में।
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

इक तो मौसम सुहाना हंसी कम न था,
साथ उस पे लिये रंग जवानी का था,
कुछ न काबू रहा अपने जज़्बात पे,
क्या से क्या कह गये, बात ही बात में।
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

अपना बीता समय याद आने लगा,
सीखते थे गणित टाट पे बैठ के,
बीता बचपन याद, आज आये मुझे
खेलना कूदना सब का संग साथ में।
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

वक्त ने 'राज' छीना वो प्यारा समय,
कर दिया बेहिसाब एक ही वार में,
इसकी इज्ज़त करो इसके रहते हुये,
कोई बच न सका वक्त की मार से।
बात ही बात में कैसे आशिक बने...

© राज शारदा

उनके चेहरे को देखा

उनके चेहरे को देखा, फिर हट न सका,
प्यार के बोल दो, उनको कह न सका,
मेरी जां तो गई, बात ही बात में,
मेरा दिल भी गया, देखते देखते।

जिनके कदमों पे चलता, है सारा जहां,
जिनकी बातों में, शामिल हैं सरगोशियां,
गोद में मेरी जो, खेले थे कल तलक
हो गये हैं बड़े, देखते देखते ।
मेरी जां तो गई....

प्यार, इश्क, मुहब्बत, शय क्या चीज़ है,
पूछते थे कभी, पास में बैठ कर,
पाठ दुनियां को वोह, हैं पढ़ाने लगे
पीर बन के जहां, में देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

बांटी खुशियां जहां में, ले औरों का ग़म,
खैर मांगी ख़ुदा से, सभी के लिये,
लोगों की इस क़दर, हक़शुमारी करी
डूब कर हम मरे देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

कहां पर मेरी मन्ज़िल, किधर रास्ता,
न कोई ख़बर थी, न कोई पता,
चलते हम अकेले, यूं बढ़ते रहे,
कब, कहां आ गये, देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

राह चलते तुम कैसे, कहां मिल गये
कुछ पता न चला, चांदनी रात में,
चंद बातें हुई, मुलाकातें हुई
हम तुम्हारे हुये, देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

हम कहां खोये थे, तुम कहां मिल गये
यूं सफ़र कट गया, देखते देखते,
हो गये जब जवां, कितनां बदला समां,
लौट आई फिजां देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

किस पे गुस्सा, क्योंकर किस पे नाराज़ हो
हो गई क्या ख़ता, देखते देखते,
नशा आंखों में, चेहरे पे छाई अदा
हो गया दिल फिदा, देखते देखते।
मेरी जां तो गई....

छोड़ी हिम्मत न बदले, इरादे कभी,
सोच ऊंची रखी, सदा सबके लिये,
था सबर जिंदगी में, यकीं "राज" पर
दे दिया रब ने सब, देखते देखते ।

मेरी जां तो गई, बात ही बात में
मेरा दिल भी गया, देखते देखते।।

© राज शारदा

श्री राम प्रकाश गहोई

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. जगदीश नारायण गहोई।**
- **माता का नाम : स्व. लक्ष्मी देवी गुप्ता।**
- **शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (अर्थशास्त्र), स्नातक (गणित), सी.ए.आई.आई.बी.।**
- **संप्रति : पूर्व मुख्य प्रबंधक (पी.एन.बी._e obc)**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य और पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष १९८० से लेखन कार्य करते हुए वर्ष २००७ सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**
  1. **छिटक रही चांदनी (साझा संग्रह)।**
  2. **उर्जीता (साझा संग्रह)।**
  3. **अपनों की बात (साझा संग्रह)।**
  4. **मै भी कलमकार मंच एवं प्रतिलिपि मंच पर रचनाएँ प्रेषित।**

निवास स्थान

- **शहर : दीन दयाल नगर।**
- **जिला : ग्वालियर।**
- **राज्य : मध्य प्रदेश।**

प्रीत

आँखों से तीर चलाती हो ।
ओंठों की प्यास बढ़ाती हो ।
यूँ फूल झरें तेरे मुख से ।
मुस्कान बहुत दिखलाती हो ।।

तेरे आँचल के पल्लू से ।
जब सन सन हवा मचलती है ।
तेरे आँचल की धड़कन यूँ।
मेरे दिल में क्यों बजती है ।।

तेरे नैनों की रक्कश से ।
बैचेन तभी हो जाता हूँ ।
आकर प्रियतम देखो मुझको।
मैं मोहपाश बंध जाता हूँ ।।

मैं चाहूँ तेरे आँचल पर ।
मेरा कर्ण सुने दिल की धड़कन ।
उस धड़कन को फिर सुन सुन कर।
मैं नाचूँ तेरे संग ही संग ।।

उस रास रंग की बेला में।
मैं रंग लगाऊँ तन मन पर।
कोई देखे या फिर न देखे ।
निश्वार्थ प्रीत हो मन ही मन।।

© रामप्रकाश गहोई

गीत लिखूँ

मन मोहक नैनों को देखूँ ।
मैं गीत लिखूँ तुम मुसुकाओ ।
पावों की बजती पैजनियाँ ।
मैं संगीत लिखूँ तुम मुसकाओ ।।

गंगा की निश्छल धारा से।
छींटे जो डालूँ बदन तेरे।
बचने की कोशिश हांथों से।
मैं प्रीत लिखूँ तुम शरमाओ ।।

नभ में उड़ते पंछी देखो।
कभी दिल की आकृति पाते हैं।
उस दिल में जब धड़कन डालूँ ।
मैं प्रीत करूँ तुम मुसकाओ।।

उस नीले अम्बर को देखो ।
मनमोहक बन आकर्षित हों ।
उस आकर्षण को अंबक में ।
मैं कैद करूँ तुम मुसकाओ ।।

ये सुंदरता ही मृगतृष्णा है।
भ्रमित करे जो जीवन को।
कोमल नयनों का दिव्यजाल।
मैं मोह करूँ तुम मुसकाओ।।

© रामप्रकाश गहोई

इबादत

तेरे कदम जो बढ़ गये।
रुकना गवारा है नहीं।
ये मन है या फिर है शरारत।
प्रियतम कहो क्या बात है ?

कुछ छिप गया कुछ हो गया।
कुछ गम है कुछ पायी खुशी।
हर बार हमने की इबादत।
कुछ तो कहो क्या बात है ?

ये रात भी कुछ यूँ कहे।
ओ चाँद तू अब रुक जरा।
ठंडी हवाएं चल रही ।
महसूस कर क्या बात है।।

तुम हो पिया की चाँदनी।
या चाँदनी का प्यार हो।
रिम झिम हुई बरसात को।
महसूस कर क्या बात है।।

चाहत भरी मस्ती भरी।
अंदाज में झूमो जरा।
ये भीगी मिट्टी है सुगंधित।
प्यारी लगे क्या बात है।।

महबूब तुम जीलो जी भरकर।
खुशियों भरा संसार है।
मुस्कराते हर पलों को।
थाम लो क्या बात है।।

© रामप्रकाश गहोई

श्री दीपसिंह भाटी 'दीप'

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. मघसिंह जी भाटी।**
- **माता का नाम : स्व. जीयों कंवर राठौड़।**
- **शैक्षणिक योग्यता : एम.ए.(हिन्दी) एम. एड.।**
- **संप्रति : पूर्व प्राचार्य (आर. ई.एस.)**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य और पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : विगत कई वर्षों से लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. डिंगल रसावल काव्य संग्रै (पद्य) ।
2. सूरां पूरां री शौर्य गाथावां भाग-१ (गद्य) ।
3. पळपळती प्रेम कथावां (गद्य) ।
4. डिंगळ रो डणको (काव्य) ।
5. सूरां पूरां री शौर्य गाथावां भाग- २।
6. मरुधरा रा महापुरुस इत्यादि।

निवास स्थान

- **शहर : इंद्रा कॉलोनी।**
- **जिला : बाड़मेर।**
- **राज्य : राजस्थान।**

बसंत बहार

कुदरत रची कृति, रमणी समान रती, चतुर सुजान सती, निरमल नारी है।
गजगति गमकाती, मंद मंद मुलकाती, मृगनैन मटकाती, बगीचे विहारी है।
कटि सिंह लचकाती, हंस ग्रीव हिचकाती, शीलवंती सकुचाती, प्रीतम पियारी है।
आवत बसंत आलि, खिलत सुमन कली, चंद को मिलन चली, चंचल चकोरी है ।।

छूटी लट खावै बट , समीर चलत सट, खुलत घूंघट पट, छवि छलकावै है।
कामदेव हो विकट , नाच करै वो निकट, अंखियन नटखट, नेह निछरावै है।
कूड़ छल को कपट , सत प्रेम सीधो सट, एकनिष्ट एक घट, हिये में हिलोरी है।
आवत बसंत आलि , खिलत सुमन कली, चंद को मिलन चली, चंचल चकोरी है।।

मृदुगात महकंत, दीसत दाड़म दंत, कंठ सूं उचारे कंत, पीया की पियासी है।
भाल बिंदी भलकत, हाथ हिना हंसकत, आभूषण अलंकृत, अंग उजियासी है।
झर झर झलकंत, जोबन उफन जंत, रसिक दुलारी रंत , गट गट गौरी है।
आवत बसंत आलि, खिलत सुमन कली, चंद को मिलन चली, चंचल चकोरी है ।

सखियां चलत संग, तन पे वसन तंग, भणकत मस्त भृंग, ठमक ठिठौली है ।
लता रही लिपटात, अंग अंग उमंगात, लोचन रही लुकात, करत किलोली है।
निरमोही मम नाथ, आन मिलो अधरात, रसवंती शीत रात निपट निगौरी है ।
आवत बसंत आलि, खिलत सुमन कली, चंद को मिलन चली, चंचल चकोरी है।।

उर फल उफनत, देह जोत दमकत, चमचम चमकत, लाल लाल लब है।
गौरे गाल गचकत, लजवंती लचकत, परी सम पलकत, गोरड़ी गजब है।
नवल यौवन नत, गदरावै गजगत, समरथ राखै सत, चरित चितौरी है।
आवत बसंत आलि, खिलत सुमन कली, चंद को मिलन चली, चंचल चकोरी है।।

© दीपसिंह भाटी 'दीप'

अस्पृश्यता अभिशाप है

उन्नति के उच्च शिखर पर, चर्चित हिंद पदचाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।

एक पिता परमेश्वर अपना, एक ही धरती माता है।
ऊंच नीच का भेद अनुचित, निर्मल गहरा नाता है।
भारतवासी भाई भाई, पुण्य कर्म प्रताप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।1।।

सृजनहार ने सोच समझकर, मानव योनि बनाई है।
जात पांत और भेदभाव की, किसने आग लगाई है।
मत बांटो मजहब में मानव, पृथ्वी पर यह पाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।2।।

आहत किया आर्यावृत को, अंग्रेजों की आंधी ने।
काट बेड़ियां मुक्त कराया, गोरे जन से गांधी ने।
नियम व्रत सत पर न्यौछावर, जपे अनेकों जाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।3।।

सत्य अहिंसा का सन्मार्ग, बापू ने था बतलाया।
आजादी का नर अलबेला, भारत माता को भाया।
सुबक रही है आज समाधि, प्रचण्ड पसरता पाप है।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।4।।

आओ मिल संकल्प उठायें, सबको गले लगाना है।
बापू के सपनों का भारत, सुंदर रूप सजाना है।
'दीप' निवेदित देशप्रेमियों, उगते सूरज आप हैं।
देवभूमि इस भारत भू पर, अस्पृश्यता अभिशाप है।।5।।

© दीपसिंह भाटी 'दीप'

वीर जवान

दुर्गम जगहों पर, हिम शिखरों पर, विजित श्रंगों पर, इतराता।
जग जल में थल में, नील गगन में, निर्जन वन में, रह जाता
प्यासा भी रहता, सबकुछ सहता, मुश्किल पथ पर, मुस्काता।
जय भारत माता, गुण नित गाता, फतह पताका, फहराता ।
वह वीर जवान है कहलाता ।।1।।

जाड़ा कंपाता, रवि तपाता, बादल जल बहु, बरसाता ।
कोहरा कुढवाता, पवन हिलाता, अडिग हिमालय, बनजाता।
जूनून जगाता, कदम बढाता, थर थर शत्रु, थर्राता ।
जय भारत माता, गुण नित गाता, फतह पताका, फहराता ।
वह वीर जवान है कहलाता ।।2।।

गिद्ध नीयत गड़ाता, लाय लगाता, आतंकवादी, उपजाता।
घुसपैठ कराता, मनुज मराता, फिर भी काफिर, इतराता।
भारत समझाता, भ्रम तज भ्राता, शासन नीति, सहजाता।
जय भारत माता, गुण नित गाता, फतह पताका,फहराता ।
वह वीर जवान है कहलाता ।।3।।

कश्मीर हमारा, कर किनारा, एक इशारा, इतना ही ।
फिर क्यों फिरता है, मारा मारा, कर्म तुम्हारा, पिटना ही।
युद्ध वीर हमारा, जन उपकारा, सौ सौ बार, समझाता ।
जय भारत माता, गुण नित गाता, फतह पताका, फहराता ।
वह वीर जवान है कहलाता ।।4।।

नमो साधना, धन्य जवानी, नमो वतन सत, परवाना।
नमो राष्ट्र भावना, नमो भवानी, देश तुम्हारा, दीवाना ।
गौरवमयी गाथा,"दीप "सुनाता, देख तुम्हें सर, झुक जाता
जय भारत माता, गुण नित गाता, फतह पताका, फहराता ।
वह वीर जवान है कहलाता ।।5।

© दीपसिंह भाटी 'दीप'

श्री राकेश राज

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री श्याम राज।
- माता का नाम : श्रीमती उर्मिला देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक एवं बीएड।
- संप्रति : अध्यापक एवं कवि।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : गद्य और पद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : नवांकुर साहित्यकार।
- प्रकाशित कृतियाँ :
- स्कूल चलें हम।
- अरमान।
- स्वावलम्बन।
- जिंदगी।
- अपनों की बात (साझा संकलन)।

निवास स्थान

- शहर : कटघरा कॉलोनी।
- जिला : जौनपुर।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

हमसे न हो पाएगा

कहते हो भूल जायें तुम्हें एक ख़्वाब की तरह,
ये हमसे न हो पाएगा क्या बात करते हो।

जो तड़पता है तुम्हारे प्यार की एक बूँद को,
सिवाय उसके हर एक पर ये इश्क की बरसात करते हो।।

चाहते तो तुम भी यही हो कि याद न आये हमारी,
याद फिर क्यों हमें यूँ बेहिसाब करते हो।

चलो लिख देते हैं खाली पन्नों पर चाहतों के सबक,
फिर कौन कितना लिखता है क्यों हिसाब करते हो।।

तुमको न पा सका हूँ दिल का अजब हाल है,
कैसे जी रहा हूँ क्यों ये सवालात करते हो।

ना कोई दाग, ना निशां,ना सुबूत,ना गवाह,
तुम क़त्ल करते हो या करामात करते हो।।

© राकेश "राज"

मिल गए हो

कुछ तो है जो मिल गए हो मुझको,
तुम यूँ ही नहीं बेवजह मिल गए हो।
झूठे फरेबी दिखावे की दुनिया में,
मुहब्बत का तुम रहनुमा मिल गये हो।।

तुम्हारे होने से ये चमन खिल गया है,
तुमसे ही जीने की वजह मिल गयी है।
राहें मुकम्मल सी नज़र आने लगी हैं,
जैसे भटके अंधेरे को सुबह मिल गयी है।।

मेरी हर आह,कराह, सिसकी में तुम हो,
मेरी याद, मेरी चाह, मेरी हिचकी में तुम हो।
तुम हो तो हर शब्द मुहब्बत से सजा लगता है,
जैसे मेरे अल्फाजों को ग़ज़ल मिल गयी हो।।

माना कि नहीं आता कुछ जताना हमें,
शुक्रिया कि तब भी समझा, जाना हमें।
हैरत में ये दिल सुकूँ भी गँवा बैठा है,
न जाने तुम कैसे मुझे मिल गए हो।।

कुछ तो है जो मिल गये हो मुझको,
तुम यूं ही नहीं बेवजह मिल गये हो।।

© राकेश "राज"

ख्वाहिश

अगर तुम चाँद भी माँगो तो कोशिश करके देखूँगा,
तुम्हीं पर ही मैं जीता हूँ तुम्हीं पर मर के देखूँगा।
नजर झुकाओ तो अँधेरा,उठाओ तो उजाला हो,
तुम्हारी आंख का काजल मैं गहरा करके देखूंगा।।

सुना है डूब जाते हैं सभी तुम्हारी आँखों के सागर में,
तुम्हारे दिल के दरिया से एक दिन गुजर कर के देखूँगा।
तेरी इक चाह में भटका हुं दर बदर मेरे हम दम,
तेरी राहें वफा में दम भर ठहर कर के देखूँगा।।

वफा गर रास न आए मेरी तो रहम इतना सा कर देना,
तुम्हारी याद के मरहम लगा कर दिल पर देखूँगा।
नहीं ज्यादा की है ख्वाहिश जगह बस दिल में दे देना,
नजर दिल हर जगह तुम्हीं को बस,बसा कर के देखूँगा।।

गुजारा है हर एक लम्हा खुशी का हो या हो ग़म का,
मुहब्बत में तुम्हारी अब हर हद से गुजर कर के देखूँगा।
बदला है जमाने को यूं तो मैंने इशारों पर,
तेरे बस प्यार की खातिर बदलकर खुद को देखूंगा।।

अगर तुम चाँद भी माँगों तो कोशिश करके देखूँगा।
अगर तुम चाँद भी माँगों तो कोशिश करके देखूँगा।।

© राकेश "राज"

श्री रमापति मौर्य

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रामराज मौर्य।
- माता का नाम : श्रीमती भानमती देवी।
- शैक्षणिक योग्यता : परास्नातक (हिंदी, संस्कृत, राजनीति शास्त्र), बीएड एवं एल. एल. बी.।
- संप्रति : सहायक अध्यापक।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : गद्य और पद्य दोनों ।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२४–२५ से।
- प्रकाशित कृतियाँ :

१–जल संरक्षण
२–कुल्हड़ की चाय
३–पतंग की डोर
४–घूंघट
५–तेरी मेरी कहानी

निवास स्थान

- शहर : अहेरीपुर।
- जिला : इटावा।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

अपनों की यादें

१

खोजती तुझको निगाहें,
ये नहीं थकती निगाहें ,
खो गये किस देश तू,
भूल गये स्वदेश तू।

२

न रो सकी न गा सकी,
तेरे लिए ही जी सकी,
फिर भी नहीं तू देखता,
लगता और को देखता।

३

आश में ही सांस है,
सांस में ही आश है,
तू हो जीना - मरना,
तुझसे ही जीना -मरना।

४

पहरेदार खड़े दुःख के,
लगता सब सो गये सुख के,
न रो सकती न गा सकती,
केवल प्यार में मर सकती।

५

आया बसंत सुख हुआ अंत,
अब संत नहीं लगता बसंत,
तुला हुआ करने को अन्त,
दुश्मन लगता है बसंत।

६

लौट आ दिल से लगा ले,
बात मेरी मान ले,
क्या भरोसा जिंदगी का,
बुलबुला है पानी का।

७

ये बसंत है रंग -रंगीला,
कुछ के मन को करै रंगीला,
दुःखियों को देता है दुःख,
सुखियों को देता है सुख।

८

धानी रंग की पहन चुनरिया,
मुस्काती है खूब गुजरिया,
मटक -मटक कर चालें चलती,
रह रह कर सब का मन हरती।

९

कहीं मटरिया गदरआई,
गन्नों में रस भर आई ,
गन्ना पेराई आलू भुजाई,
एक साथ में दिख जाई।

© रमापति मौर्य

पहला खत

ब्याह हुआ पत्नी घर आईं,
खुशियां सारी लाईं।
प्यार-मोहब्बत की बातें,
अपना रंग दिखाईं।।१।।

कई दिवस संग में बिता ,
प्यार- मोहब्बत जागा।
हंसी -खुशी से वक्त बीतता,
एकाकीपन भागा।।२।।

मायके जाने की बातें ,
जब पत्नी की आईं ।
एक दूसरे की तड़पन,
आंखों में दिखलाई।।३।।

वो भी थी मजबूर परिंदा ,
वो कैसे रुक सकती थीं ?
लोक- लाज के डर से,
वो जाने को तत्पर पर थी।।४।।

नींद नहीं आई दोनों को ,
आंखों में रातें बीती।
कब तक आना होगा फिर,
ये बातें होती रहतीं।।५।।

पहले का वो समय गजब था,
आने में बरसों लगते।
एक दूसरे की तड़पन में,
प्यार परिपक्व होते।।६।।

प्यार-मोहब्बत की आगें,
जब दिल में लग जातीं।
लोक -लाज सारी प्रथायें,
मिट्टी सी बह जातीं ।।७।।

हुई जुदाई कई मास की,
दिल में तड़कन बढ़ती।
वो कैसी हैं मैं कैसा हूं ,
बातें दिल में चलतीं।।८।।

एक दिवस मैं बैठे-बैठे ,
पहला ख़त लिख डाला।
मन की पीड़ा दिल की तड़पन,
खत में सब लिख डाला।।९।।

मेरे ख़त के जबाब में ,
वो भी खत लिख डालीं।
जैसे तेरे दिल की हालें,
वैसे हूं लिख डालीं।।१०।।

ख़त के आने-जाने का,
इंतजार गजब होता था।
कई बार डाकखाने का,
चक्कर लगाना पड़ता था।।११।।

© रमापति मौर्य

मोहब्बत के शेर

तुम्हारे प्यार में जीना,
तुम्हारे प्यार में मरना।
यही मतलब मोहब्बत का,
अकेले जीना क्या वरना।।१।।

दुनियां क्या कहे हम को,
हमने छोड़ दी सुनना?
तुम्हारे पास रह के अब,
केवल धड़कने गिनना।।२।।

हमें अब डर नहीं लगता,
कुछ भी कर गुजरने का।
मोहब्बत की यही राहें,
डर क्या जीने- मरने का?।।३।।

जमाने से नहीं डरता,
तुम भी डर तो न दिखला।
हजारों प्यार में बांधा ,
कुछ साहस तो दिखला।।४।।

दीवानी बन गई तेरी,
दीवाना बन के तो दिखला।
हमारा हाथ हाथों में,
रखकर तो दिखला।।५।।

शहर में प्यार की चर्चा,
हम दोनों की चलती है।
लगता अब घरों से तू ,
नहीं बाहर निकलती है।।६।।

अब तो तेरे अलावा,
दूजी नहीं दिखती।
निगाहें ढूंढते तुझको,
मगर तू क्यों नहीं दिखती।।७।।

जब से आप से रिश्ता जुड़ा है,
प्यार का मेरा।
तुम्हारे सिवा ये दिल,
नहीं लगता कहीं मेरा।।८।।

बदनामियों का डर हमें,
अब नहीं लगता।
तूफानों से लड़ने में ,
अब डर नहीं लगता।।९।।

मोहब्बत वो नहीं करते ,
जो दुनियां से डरा करते।
कभी लैला - मजनूं की ,
नहीं जोड़ी बना करते।।१०।।

प्यार -मोहब्बत करने वाले,
हर सीमायें तोड़ी हैं ।
मिलने वाले मिले प्यार से,
हर बाधायें तोड़ी हैं।।११।।

© रमापति मौर्य

नैनों की बेचैनी

प्रेम- नैन की बेचैनी ,
नहीं छिपाये छिपती।
प्रेम -अग्नि की तपन ,
केवल उलझन देती।।१।।

सूरत तेरी बसी नैन में ,
कभी भूल न पाती ।
बेचैनी की हालत में,
नींद रात न आती ।।२।।

कोशिश करती बहुत मगर ,
हर कोशिश निष्फल पाती।
नैनों के बेचैनी की,
सीमा नित बढ़ती जाती ।।३।।

तेरे आने की राहों पर ,
नैन गड़ाये रहती ।
बार-बार उसे मारग को,
अंसुवन से सींचा करती।।४।।

सावन -भादौं नैन हमारे,
उर को सिंचित करते।
नहीं धड़कती प्रेम-अग्नि से,
भस्म सात तन मिलते।।५।।

© रमापति मौर्य

कृष्ण वियोग में राधिका

हे नाथ ! तुम्हारे चरणों में,
मैं कोटि नमन कर जीती हूँ।
धरती -अंबर के कण-कण में ,
मैं दरस तुम्हारा करती हूँ।।१।।

जो वचन लिये थे नाथ उसे,
भरपूर निभाया करती हूँ ।
प्रेम पीड़ा की आंसू,
आंखों में रोका करती हूँ।।२।।

अदृश्य मगर साकार नाथ,
तेरी महिमा कण-कण दिखती।
निशदिन नाम तेरा जपती,
मधुबन- यमुना जी कहतीं।।३।।

हे नाथ तुम्हारे चरणों की,
ये दासी बड़ी विकल रहती ।
तेरे आवन की आशा में,
केवल जीवित रहती।।४।।

हे नाथ! परीक्षा बार-बार ,
क्यों भक्तों की तू लेते हो ।
जीवन -मरण के बंधन से,
क्यों मुक्त नहीं कर देते हो।।५।।

हमें सहारा है तेरा,
भवसागर पार लगा दोगे।
लहरों से किश्ती जूझ रही,
किश्ती को घाट लगा देगें ।।६।।

हे नाथ ! तुम्हारी ये राधा,
अब सांसें गिनती रहती है।
तेरे आने की पल -पल की,
वो घड़ियां गिनती रहती है।।७।।

तेरे दर्शन के लिए नाथ ,
आंखों ने प्रण कर रखा है।
नींद न आती आंखों को,
जैसे वो व्रत कर रखा है।।८।।

जीवन का मकसद आप नाथ,
पर आप भुला कर बैठे हैं।
मैं बहुत भुलाना चाही लेकिन,
पर आप बांध कर रखे हैं।।९।।

© रमापति मौर्य

श्रीमती सुनीता देवी मौर्य

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **माता का नाम : राम दुलारी जी।**
- **पति का नाम : श्री रमापति मौर्य।**
- **शैक्षणिक योग्यता : इंटरमीडिएट।**
- **संप्रति : लेखिका, कवयित्री एवं सुगृहिणी।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : कई वर्षों से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. **नदियों की राहें।**
2. **आजादी की कीमत।**
3. **प्रभात वर्णन।**
4. **मैं भी कलमकार मंच पर कई काव्य सृजन किए हैं।**

निवास स्थान

- **जिला : इटावा।**
- **राज्य : उत्तर प्रदेश।**

मन का सूना साज

मन का सूना साज हमारे,
खुशियों से भर जाता।
वीरान और पतझड़ मन में,
ऋतु बसंत मन आता।।1।।

ऋतु वसंत का हुआ आगमन,
तन -मन को हरषाया।
वीरान और पतझड़ मन में ,
उल्लास नया भर आया।।2।।

आने वाले पिया हमारे ,
ऋतु वसंत कहती।
मन का सूना साज हमारे,
हर्षित मन से कहती।।3।।

उहापोह में जीवन कटता,
खुशियां रहतीं नादारत।
ये भी कोई जीवन मेरा,
जीवन रहता नादारत।।4।।

सूनापन मन से मिट जाये,
सारी खुशियाँ जी भर आये।
अपनेपन में चाह बहुत है,
लड़ने का उत्साह बहुत है।।5।।

© सुनीता देवी मौर्य

धागा बांधा प्रीत का

धागा बांधा प्रीत का,
कभी न तोड़ा जाय।
एक बार टूटे अगर ,
कभी न जोड़ा जाय।।१।।

प्रीत की अपनी रीति है,
सबसे करै जुड़ाव।
जाति-पाति -मजहब का,
ना रहता टकराव।।२।।

धागा बांधा प्रीत का,
रखना है सम्मान।
अगर टूट जाये कहीं,
हो जाये अपमान।।३।।

मान-शान- सम्मान का,
धागा है प्रतीक।
जुड़े हुए हैं भाव हिय,
दिखता है प्रतीक।।४।।

प्रेम प्रेम से बंध गया,
तो कैसा टकराव।
मन मन से मिलता रहे,
नहीं हो मनमुटाव।।५।।

ना समझ के ही कारण,
बढ़ता है टकराव।
समझ- बूझ अच्छी रहे,
होत नहीं टकराव।।६।।

अहम भाव टकराव का,
कर्ता -धर्ता होय।
हम भाव मिट जाय तो,
हृदय प्रसन्न होय।।७।।

© सुनीता देवी मौर्य

वक्त की यादें

बीता वक्त पर यादें,
अब भी ताजी लगतीं ।
बच्चों की किलकारी ,
अब भी ताजी लगतीं।।1।।

तेरी हरकत की बातें ,
जैसे कल की लगतीं।
बात पुरानी है लेकिन ,
यादें ताजी लगतीं।।2।।

वक्त बीत गया लेकिन ,
यादें भूल न पाई।
भले- बुरे की याद सजो कर,
खुशी और गम पाई।।3।।

बीता वक्त पर यादें,
हमें सताया करतीं।
लाख बिसारें यादें लेकिन,
याद सताया करतीं।।4।।

दूरी है पर अंतर्मन,
नहीं समझ कुछ पाता।
अपनों की यादों से,
अलग नहीं हो पाता।।5।।

बीते वक्तों की बातें,
हमें सिखाया करतीं।
अच्छे -बुरे सभी कर्म,
सबक सिखाया करते।।6।।

© सुनीता देवी मौर्य

डॉ. नौशाब उद्दीन अहमद (सुहैल दतियावी)

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : हसीन उद्दीन कुरैशी।**
- **माता का नाम : मुजफ्फर जमाल कुरैशी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : एम ए हिंदी साहित्य, अदीब ए कामिल, विद्या वाचस्पति, विद्या सागर, बी. एच. एम. एस. ।**
- **संप्रति : चिकित्सा कार्य (यूनानी हकीम)।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य और पद्य दोनों ।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष 1984 से लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. दर्द ए हयात।
2. चराग जलता रहा।
3. फिशर ए करब।
4. जुल्फो की शाम।
5. नसीम ए सहर।

निवास स्थान

- **जिला : दतिया।**
- **राज्य : मध्य प्रदेश।**

गज़ल १.

उनसे इश्क करके क्या हाल कर बैठे।
अपना जीना भी मुहान कर बैठे।।

कह उठे चश्मे नम देखकर वो।
क्यूँ आंखें तुभ लाल कर बैठे।।

हो गयी क्या खता कोई तुमसे।
जो खुद ही भलाल कर बैठे।।

सिला इश्क का मिल गया जब।
वो आँखों में आँखें डालकर बैठे।।

आज उठने को है एक परदा।
हरेक दिल को संभाल कर बैठे।।

उनसे इश्क करके भरा नहीं क्या दिल।
अजी तुम यह कैसा सवाल कर बैठे।।

'सुहैल' भर आयीं फिर मेरी आँखें।
हम जब उनका ख्याल कर बैठें।।

© डॉ नौशाब उद्दीन अहमद (सुहैल दतियावी)

गज़ल २.

मुझे तुम मिल गये तो, जिन्दगी अच्छी लगी।
आज पहली बार फिर ये खुशी अच्छी लगी।।

छाने लगी दिल पे मेरे, सावन की वो काली घटा।
जबसे मेरे दिल को वो, सांवली अच्छी लगी।।

पैकर-ऐ-हुस्न कहूँ या हुस्न-ऐ-सरापा आपको।
आज मुझको तेरी यह, सादगी अच्छी लगी।।

मेरे दिल से इसका को सारा गुबार जाता रहा।
जबसे उसके होंठों की, वह हसी अच्छी लगी।।

जिस दिन से तूने बज़्म में गुनगुनाई मेरी गज़ल ।
सच कहूँ तब से मुझे, शायरी अच्छी लगी।।

हरेक शाख, हरेक शबनम, कह रही है दास्तां।
आज मुझे उस बागवां की हर कली अच्छी लगी।।

यूँ तो है सारा शहर, बेइन्तहा खूबसूरत दोस्तों।
जिस गली में उसका घर, वो गली अच्छी लगी।।

दे रहा मुझको गवाही, आसमां से चाँद भी ।
"सुहैल" मुझे रात भर, वो चाँदनी अच्छी लगी।।

© डॉ नौशाब उद्दीन अहमद (सुहैल दतियावी)

गज़ल ३.

सामने आते नहीं, ख्वाब में आते क्यूँ हो।
अपने दिलदार को, इतना भी सताते क्यूँ हो ।।

शव तो गुजर चुकी है, अब सहर होने को है।
आ भी जाओ अब, फासलें बढ़ाते क्यूँ हो ।।

दो दिलों को अब तो, मिल भी जाने दो, ।
प्यार की राह में, दीवार उठाते क्यूँ हो ।।

क्या ख़ता है, मेरी, जिसकी ये सज़ा ही तुमने ।
अपनी नज़रों से मुझे, आप गिराते क्यूँ हो।।

ज़माना तुमको बदनाम भी कर सकता है।
हर किसी को हर बात बताते क्यूँ हो।।

पेड़ को घर में लगाओ, जिनमें गुल ओ खुश्बू हों,
खार जिनमें हो उन दरखतो को लगाते क्यूँ ही ।।

"सुहैल" रुठें है वो, अब नहीं मानेगें।
जाने दो उनको अब, और मनाते क्यूँ हो ।।

© डॉ नौशाब उद्दीन अहमद (सुहैल दतियावी)

श्रीमती हेमलता साहूकार

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री प्यारे लाल साहू।
- माता का नाम : श्रीमती गोदावरी साहू।
- पति का नाम : श्री साहूकार साहू।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातक, बीएड एवं पीजीडीसीए।
- संप्रति : शिक्षिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२२ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. बचपन के खेल निराले।
2. अलबेली चाय।
3. कस्तूरी सुगंध।
4. आजादी के नायक।
5. अपनों की बात।

निवास स्थान

- शहर : कुरूद।
- जिला : धमतरी।
- राज्य : छत्तीसगढ़।

सुकून

तुम्हारे दामन में आकर हमने
जन्नत का सुकून पा लिया है,
खुद को ही भूल गये हैं हम
बस तुमको ही हमने
अपना खुदा बना लिया है।
अपने आप से भी ज्यादा
अब तुमसे प्यार करते हैं,
रब से भी ज्यादा अब
हम तुम पर एतबार करते हैं,
अपनी मान-सम्मान का हमने
अब तुमको ही अपना पहरेदार बना लिया है।
तुम्हारे दामन में आकर ......

तुम्हारे सागर जैसे नैनों में,
हम झील बनकर समा गये है,
जब से देखा है तुमको
तुम्हारी हर अदा के दीवाने बन गये है।
तुम्हारे ही पावन प्रेम से,
हमने यह जीवन संवार लिया है ।
तुम्हारे प्रीत की खुशबू से
अपना तन-मन महका लिया है
अब तो तुमको ही हमने
अपना सब कुछ बना लिया है।
तुम्हारे दामन में आकर.....

कभी भी किसी भी कारण से तू मुझसे रूठे ना,
मेरे जीवन साथी ये रिश्ता कभी टूटे ना,
जन्मों जनम तक साथ तेरा कभी छूटे ना,
सुख हो या दुख हर पल के लिए
तुमको ही अपना साथी बना लिया है।
छोटा सा ये घर-परिवार हमारा
जिसमें हमने सारे संसार की खुशियाँ बसा
लिया है।
तुम्हारे दामन में आकर हमने
जन्नत का सुकून पा लिया है।

© हेमलता साहूकार

सिलसिले जो फ़साने बन गए

उनसे मिलना, बातें करना
उन्हें एकटक निहारना,
सुंदर से मुखड़े पर
वो दो प्यारे-प्यारे नैना,
रुप ऐसा अनुपम
जिसके हम दीवाने बन गये,
सिलसिले जो फ़साने बन गए।

हाथों में हाथ लेकर
हर जगह साथ चलना,
सुख -दुख में साथ निभाना
संग- संग हँसना व हँसाना,
हम दोनों शमा और परवाने बन गये
सिलसिले जो फ़साने बन गए।

गाते रहें मिलकर प्रेम के तराने,
जन्मो-जन्म तक चलते रहे ये अफ़साने,
इश्क़ क्या होता है ये मैं जानूँ और तू जाने,
हम तो दो जिस्म और एक जान की,
अल्फाज़ न हो जिसे बयां करने की,
उस मोहब्बत की मिसालें बन गये,
सिलसिले जो फ़साने बन गए।

© हेमलता साहूकार

एहसास

जाने ये कैसा एहसास है ?
जाने ये कैसा एहसास है ?
हर पल लगता है कि
तू मेरे आसपास है....

तुम हो मेरे अपनों में शामिल
तुम मेरे सबसे खास हो,
जितना भी देखूं तुझको
बुझती नहीं नैनों की प्यास है....

तेरे ही नाम से ही चलती मेरी
आती जाती हर एक श्वांस है।
दूर रहकर भी तू
मेरे दिल के पास है,

शायद
तुम ही हो वो शख्स
जिसकी थी मुझे तलाश है,
जाने ये कैसा एहसास है.....

© हेमलता साहूकार

श्रीमती शालिनी श्रीवास्तव

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव।
- माता का नाम : श्रीमती माया श्रीवास्तव।
- पति का नाम : श्री संजय कुमार श्रीवास्तव।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।
- संप्रति : शिक्षिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी ।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२२ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. प्रीत की डोर।
2. माँ का आँचल।
3. प्रीत पिया की।
4. शब्दों की महक।
5. सांवरे की बंसी ।
6. सोशल मीडिया मंचों पर लेखन।
7. विविध पत्र पत्रिकाओं में कृतियाँ प्रकाशित

निवास स्थान

- जिला : गोरखपुर।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

दर्द जाते नहीं दबाने से

दर्द जाते नही दबाने से
कैसे ये बात कहें
बेरहम जमाने से
दर्द जाते नही दबाने से
कैसे ये बात कहें
बेरहम जमाने से
तेरा मिलना
वो प्यार की कसमें
जब निभाई थी
इश्क की रस्में
अब तो भूले हो तुम ज़माने से
दर्द जाते नहीं दबाने से
कैसे ये बात कहें
बेरहम जमाने से
हमनें सोचा था कि हम
भूल चुके हैं तुमको
अश्क बह निकले
इसी बहाने से
दर्द जाते नहीं दबाने से
कैसे ये बात कहें
बेरहम जमानें से
दर्द जाते नहीं दबाने से।

© शालिनी श्रीवास्तव "सनशाइन"

आँसू

यादों के आइने में ,
जो अक्स तेरा था ।
आँखों से बह निकला
और चूर हो गया।

हर एक मुस्कान पर ,
हजार - हजार आँसू ।
सिला है मेरी वफा का,
मेरे ये बेहिसाब आँसू ।

आंसू और मुस्कान में है,
जाने कितना फासला।
तेरी एक मुस्कान पर हैं,
कुर्बान मेरे तमाम आंसू।

बहाए थे हजार आंसू
हमने तेरे जाने के बाद ।
एक मुस्कान नाआ सकी
वापस तेरे आने के बाद ।

लगता है कुछ गहरा नाता
मेरा और इन आंसुओ का।
करे जिंदगी जितने सितम ,
साथ निभाते हैं ये हरदम।

जिंदगी का फलसफा
अब समझ आया मुझे।
कहती है मुस्कराया करो
देने के बाद तमाम आंसू।

मेरे आँसुओं की कहानी,
कोई भी ना जान सका।
सीख लिया मुस्कराना मैनें
हर सितम सहने के बाद।

© शालिनी श्रीवास्तव "सनशाइन"

देखो सावन बीता जाए

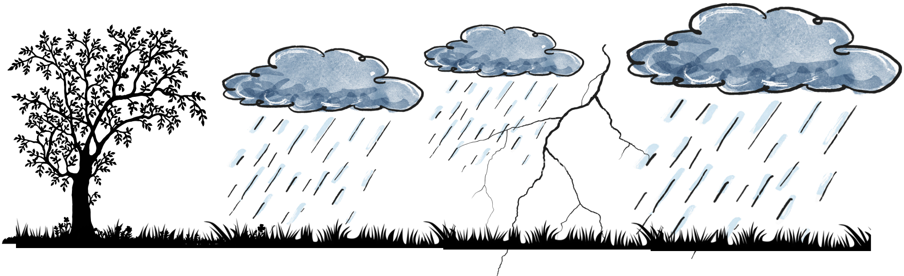

पवन झकोरा शोर मचाकर, ये हमको बतलाए,
देखो सावन बीता जाए, प्रियतम क्यों ना आए ?

तुम बिन मेरा आँगन सूना, सूने हैं मेरे दिन रैन,
प्रियतम तेरी राह निहारे, व्याकुल मेरे नैंन।

उमड़-घुमड़ कर बादल आएं, तुमको मेरे पास बुलाए,
बिन बरसे चले ये जाएं देखो सावन बीता जाए।

घिरकर आए कोई बदरिया, शोर मचाए ये पुरवइया,
सोंधी सी माटी की खुशबू , हवाओं में बिखराए।।

पपीहा पिहू-पिहू का शोर मचाए,
मेरे मन को ये तरसाए, देखो सावन बीता जाए।

प्रियतम तेरी यादों में मेरा, तन -मन भीगा जाए,
परदेसी पिया अब तक ना आए, देखो सावन बीता जाए।।

© शालिनी श्रीवास्तव "सनशाइन"

श्री बलवंत सिंह राणा

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. देव सिंह राणा।**
- **माता का नाम : श्रीमती रामप्यारी देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक, डॉक्टर इन लिटरेचर।**
- **संप्रति : मैनेजर, पूर्व शिक्षक, लेखक एवं कवि ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : विगत 15 वर्षों से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**
  1. **मातृत्व।**
  2. **भाव विभोर।**
  3. **अपनों की बात।**
  4. **बहती सोच।**
  5. **गुरुचरणाम्बुज।**

निवास स्थान

- **जिला : सोलन।**
- **राज्य : हिमाचल प्रदेश।**

रिश्तों की कहानी

वो बचपन लौट कर नहीं आता।

बीता लम्हा हर पल केवल मुस्कुराता।

पापा , माता जी का आदेश याद आता।

तीन भाई एक बहन हंसते खेलते मिलकर।

सदा मुस्कराते घर के लिए सोते उठते।

वक्त के संग किताब कलम भी पकड़ी।

पढ़ते हुए बस कुछ जुनून था बनने का।

बस किताबों के पन्ने पलटते हुए सालों साल।

कुछ रिश्ते छूट गए कुछ नए आयाम जुड़ते गए।

ऐसा दौर आया, बहन ने नाता छोड़ दिया।

बड़े भाई का विवाह खुशी से हो गया।

समय के साथ साथ वकील अध्यापक बन गए।

आज भी इन रिश्तों में बधकर जी रहे हैं।

कहीं ख़ुशी कहीं दर्द अपनो का झेल रहे हैं।

रिश्तों को शान्ति से बचाने के खातिर

जीवन को एक नई पहचान दे रहे है।

सच्चे अर्थों में रिश्तों की पहचान कर रहे हैं

© डॉ बलवंत सिंह राणा

तूफान की आहट

तूफान के आने की आहट सुनाई दे रही है।

चारों और मौत में सिमटी लाशेऔर चीत्कार

ख़ुदा ने भी अपने रहमों के पिटारे से मुंह मोड़ लिया।

आदमी को बेशर्मी में सिमटा देखकर उसने

अपनी रहमत को कुछ पल रोक दिया।

जंगल कट रहे है। वीरानी चारों दिशाओं में फैल रही।

ईश्वर की रचना माटी में मिल रही है।

जीवन हर पल कठिन घड़ी से गुजर रही हैं।

वक्त इस कदर ताने मार रहा है जैसे

तूफान कोई तेज आने वाला है।

© डॉ बलवंत सिंह राणा

इज्जत

हर खुशी से ऊपर उठकर जीता हूँ।

इज्जत के खातिर चुप रहता हूँ।

पता नहीं सही परिभाषा इस जीवन की।

बस दिल किसी का ना दुःखी हो यहाँ पर

इसलिए अपनी इज्जत भी दाव पर लगा दी है।

पैसे ने सबको बांट दिया पल भर में

कौन छोटा कौन बड़ा है जहाँ में।

सब लालच ने निगल लिया है यहाँ पर।

अब तो कुछ अहसास नहीं होता है।

क्या अच्छा लगता है और क्या बुरा?

जीवन तो जैसे, एक कठिन सपना है।

लेकिन इज्ज़त और सम्मान माया ने खरीद लिया।

जीवन की मर्यादा को कुछ पल बेच दिया है।

इज्जत गरीब की कहाँ अब जग में

धन को ही सबने मिलकर सम्मान मान लिया।

इज्जत को यारो पल में नीलाम कर दिया।

© डॉ बलवंत सिंह राणा

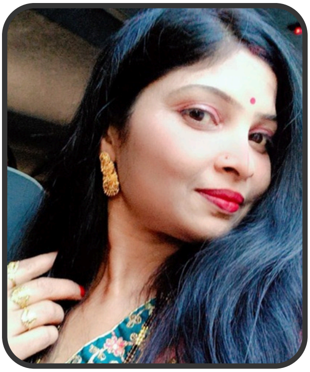

श्रीमती रीना त्रिपाठी

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री पार्थेश्वर तिवारी।**
- **माता का नाम : श्रीमती पुष्पा तिवारी।**
- **पति का नाम : श्री धनंजय तिवारी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं डीएलएड।**
- **संप्रति : लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२२ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**
  1. **शब्दों की महक।**
  2. **उनसे इश्क़ करके।**

निवास स्थान

- **जिला : देवरिया।**
- **राज्य : उत्तर प्रदेश।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

चाहत का दर्द

मिले ना दर्द ऐसा किसी को चाहत में,
फना हो गये हैं हम किसी की चाहत में,
ऐ दोस्तों तुम न करना किसी की चाहत,
रूसवा हो गये हैं हम किसी की चाहत में।

मिले ना दर्द ऐसा किसी को चाहत में,
फना हो गये हैं हम किसी की चाहत में।
आंखें भर आई लग गए हजारों पहले,
मिलन के बदले मिली जुदाई किसी की चाहत में।

मिले ना दर्द ऐसा किसी को चाहत में।
फना हो गये हैं हम किसी की चाहत में।
ना करो कोई सवाल ऐ लोगों हमसे,
हम देंगे क्या जवाब किसी की चाहत में।

मिले ना दर्द ऐसा किसी को चाहत में।
फना हो गये हैं हम किसी की चाहत में।।

© रीना त्रिपाठी

रिश्ते

कुछ लोग रिश्ते इस कदर निभा के चले जाते हैं,
आते हैं जिन्दगी में और रूला के चले जाते हैं।
पहले तो यकीन दिलाते हैं कि वोहमारे ही हैं,
फिर न जाने क्यों वो गैर बना केचले जाते हैं।

कुछ लोग रिश्ते इस कदर निभा के चले जाते हैं।
आते हैं जिन्दगी में और रुला के चले जाते हैं।
भरम ये था कि उम्र भर वो साथ निभाएंगे,
जो कसमें वादे अक्सर यूँ ही भूला के चले जाते हैं।

कुछ लोग रिश्ते इस कदर निभा के चले जाते हैं।
आते हैं जिन्दगी में और रूला के चले जाते हैं।
कई बार सोचे कि चलो उनके सारे खत जला देते हैं,
मगर खुदा की कसम, वो सारे खत हमको उनसे मिलाके चले जाते हैं।

कुछ लोग रिश्ते इस कदर निभा के चले जाते हैं,
आते हैं जिन्दगी में और रूला के चले जाते हैं।
कई दफा वो अक्सर रुबरु तो होते हैं,
होटों पे मुस्कराहट और आंखों में कुछ छुपा के चले जाते हैं।

कुछ लोग रिश्ते इस कदर निभा के चले जाते हैं,
आते हैं जिन्दगी में और रूला के चले जाते हैं।

© रीना त्रिपाठी

नशा

तिनके से बना आशियां न जलाओ यारों।
मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।
इन्तजार करेंगे उनकी, यूँ ही कयामत तक
यहाँ चरागें वफ़ा कोई और, न जलाओ यारों।

मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।
क्या हुआ वो, बेवफा जो हो गये
नाम कोई और जुबां पे न, लाओ यारों।
मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।

वो न आये, उनकी यादें ही सही
वो न आये, उनकी यादें ही सही
उनकी यादों पे कोई इल्जाम , न लगाओ यारों।
मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।

मेरे हर शौक, मेरी जिन्दगी मिटा दो, लेकिन !
मेरे हर शौक, मेरी जिन्दगी मिटा दो, लेकिन !
दर्द है इलाज-ए- दिल, न इसको मिटाओ यारों।
मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।

तिनके से बना आशियां, न जलाओ यारों।
मैं नशे में हूँ अभी, न होश में लाओ यारों।

© रीना त्रिपाठी

डॉ. प्रीति चौबीसा

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री हेमेंद्र कुमार चौबीसा।
- माता का नाम : श्रीमती कौशल्या देवी चौबीसा ।
- पति का नाम : श्री अनिल कुमार गुप्ता।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर, एम. फिल, विद्या वाचस्पति एवं बीएड।
- संप्रति : प्राचार्य, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२३ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास।
2. अन्वेषक (पत्रिका में अध्याय प्रकाशित)।
3. जनरल ऑफ फंडमेंटल एंड कम्पेरेटिव रिसर्च (पत्रिका में अध्याय प्रकाशित)।

निवास स्थान

- स्थान : तिलकनगर ।
- जिला : डूंगरपुर।
- राज्य : राजस्थान।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

बेख़ौफ़ मुहब्बत

अगर मोहब्बत मेरी बेखौफ ना होती,
तो जमाने का डर मुझे घेर लेता।
अगर विश्वास तुझ पर ना होता,
तो ये सांसें मेरी थम जाती।

अगर कसक मुझ में न उठती,
तो तेरी कमी मुझे खटकती,
अगर मोहब्बत मेरी बेखौफ ना होती,
तो मेरी मोहब्बत अधूरी होती।

अगर इश्क में तेरे मौत भी आ जाती,
तो मौत में भी जिंदगी मिल जाती।
अगर मोहब्बत मेरी बेखौफ ना होती,
तो दर्द के दरिया में डूब जाती।

अगर इश्क में तेरे बेखौफ ना होती,
तो हर जगह तस्वीर तेरी नजर न आती।
अगर मोहब्बत मेरी बेखौफ न होती,
तो तुझसे जुदा होने के डर से मर जाती।

© डॉ. प्रीति चौबीसा

कहानी या निशानी

अगर रख सको सम्हाल कर मुझे,
तो बन जाएगी एक अमूल्य निशानी।
हर पल में होगी मेरी मौजूदगी,
तुम्हारी यादों में बसी एक कहानी।

मैं वो क्षण हूँ, जो कभी लौट कर नहीं आता,
मैं वो स्पर्श हूँ, जो दिल को छू जाता।
तुम्हारे जीवन का एक अनमोल हिस्सा,
जो सहेज कर रखा, तो बन जाऊँगा किस्सा।

पर अगर मेरी कद्र न कर सके,
और मुझे खो दिया किसी मोड़ पर,
तो मैं बन जाऊँगा बीती हुई याद,
जो रह जाएगी सिर्फ एक कहानी बनकर।

कहानी, जिसमें होगी कुछ अधूरी बातें,
कुछ ख्वाब, जो कभी पूरे न हो सके।
एक अफसोस, जो दिल को खाएगा,
एक सवाल, जो कभी जवाब न पाएगा।

इसलिए सोच लो, क्या बनाना चाहते हो—
एक निशानी, जो जीवनभर संग रहेगी,
या एक कहानी, जो केवल पछतावे में बहेगी।

© डॉ. प्रीति चौबीसा

जज़्बात

मेरी सांसें धीमी हो जाती हैं उसकी याद में,
मेरा दिल धड़कता नहीं है उसकी याद में।
मेरी आंखें नम हो जाती हैं उसकी याद में,
मेरा मन खो जाता है उसकी याद में।
जज्बात मेरे बिखर जाते हैं उसकी याद में,
दिल मेरा टूट जाता है उसकी याद में।
मेरी सांसें धीमी होजाती हैं उसकी याद में,
मेरा मन खो जाता है उसकी याद में।
उसकी यादों को मिटाने के लिए,
मुझे अपने दिल को पत्थर बनाना होगा।
उसकी यादों को भूलने के लिए,
मुझे अपने मन को खाली करना होगा।
उसको भूलना है तो खुद को भूलना होगा,
जो जान निसार करता था उसने फेर ली है आंखें।
उसकी यादों को मिटाना है,
तो खुद को मिटाना होगा।

© डॉ. प्रीति चौबीसा

श्रीमती नीलम सिंह

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री नर्मदा सिंह।
- माता का नाम : श्रीमती प्रभा सिंह।
- पति का नाम : श्री अभिषेक सोलंकी।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर (माइक्रोबायोलॉजी)
- संप्रति : शिक्षिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य ।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२३ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. कई कविताएं विविध समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई हैं।
2. कई कविताएं मंचों पर भी उपलब्ध हैं।
3. यह पहला अवसर है जब कविताएं किसी पुस्तक में प्रकाशित होने जा रही हैं।

निवास स्थान

- जिला : भोपाल।
- राज्य : मध्य प्रदेश।

तेरे इश्क़ पर बारी जाऊँ

तेरे इश्क पर बारी जाऊँ ,
तुझे ही अपना पाऊँ ।
तू ही है धड़कन मेरी,
तुझसे ही आती सांसे मेरी,
तू ही है मुस्कान मेरी,
तुझसे ही आती खुशियाँ मेरी,
तेरे इश्क पर बारी जाऊँ ,
तुझे ही अपना पाऊँ ।
तेरे जाने से उदासी छाये,
तेरे बीन रहा न जाये,
तेरे याद से ही मुस्कान आये,
तेरे बीन आंसू छलक जाये,
तेरे इश्क पर बारी जाऊँ ,
तुझे ही अपना पाऊँ ।
तू है तो सांसें है,
वरना सांसें जाती है,
तू है तो चेहरे पर हंसी है,
वरना आंसुओं की झड़ी है।

© नीलम सिंह

अपना बना रही हैं।

वो जुल्फो को यूं हटा रही हैं,
मानों मुझे अपना बना रही हैं।
उसकी मुस्कान धड़कने बढ़ाए,
उसकी बातें दिल में समा जाए,
उसकी बिंदिया,
मेरी चुराये निंदिया,
उसकी पायल,
दिल को करें घायल,
जुल्फो को यूं हटा रहीं हैं,
मानों मुझे अपना बना रही हैं।
उसके आने से मैं महक जाऊँ,
उसके बातों से मैं चहक जाऊँ,
उसके झालें,
मुझको पा लें,
उसका गजरा,
दिल को दे धड़का,
वो जुल्फो को यूं हटा रही हैं,
मानों मुझे अपना बना रही हैं।

© नीलम सिंह

पल भर के लिए

पल भर के लिए पल भर प्यार कर लूँ,
पल भर के लिए पलको में जरा भर लूँ।
पाया है तुझे पल भर के लिए,
यूं ही कैसे पल भर के लिए पाबंद करूँ,
पाया है तुझे कितने पैमानों के बाद,
यूं ही कैसे पल भर के लिए पाबंद कर दूँ,
पल भर के लिए पल भर प्यार कर लूँ,
पल भर के लिए पलको में जरा भर लूँ।
पल भर के लिए पंख मिल जाते,
उड़ जाती पेड़ की पात बन कर,
पहचान है पलकों को पल भर की,
पछतावा है पलकों को पल भर का,
पल भर के लिए पल भर प्यार कर लूँ,
पल भर के लिए पलको में जरा भर लूँ।

© नीलम सिंह

श्री सुशांत कुमार पाठक

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री अक्षयवट नारायण पाठक।**
- **माता का नाम : श्रीमती पुष्पा देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक प्रशिक्षित।**
- **संप्रति : शिक्षक, लेखक एवं कवि ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०१९ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. तिरंगा।
2. हमारी हिन्दी।
3. 23 मार्च।

निवास स्थान

- **ग्राम : भुताही मुरगांव।**
- **जिला : हजारीबाग।**
- **राज्य : झारखंड।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

चाँद से जुदा होकर

चाँद से होकर जुदा कब चाँदनी रह पाई है,
प्राण-तन की दूरियाँ कब जिंदगी सह पाई है।
मैं भ्रमर, तू बन सुमन चल साथ जी लें जिंदगी,
मीत आ! परिरंभ में कर लें मिलन की बंदिगी ।
सोच! नदिया बिन समंदर आस, कब बह पाई है,
चाँद से होकर जुदा कब चाँदनी रह पाई है ।
मैं विहग तुम पंख हो आओ क्षितिज तक बढ़ चलें,
झील, नदियाँ वन सरोवर प्रीति दिल में गढ़ चलें।
चातकी चातक बिना कब चैन सुख गह पाई है,
चाँद से होकर जुदा कब चाँदनी रह पाई है।
तन भले हीं पास मेरे मन तुम्हारे पास है,
सात फेरे ले सँवारे ये मिलन अनुवास है।
प्रीति की संवेदना की बात दिल कह पाई है,
चाँद से होकर जुदा कब चाँदनी रह पाई है।।

© सुशांत कुमार पाठक

सुष्मित मन

धड़कती है धड़कन तेरा नाम लेकर,
महकता है मधुबन तेरा नाम लेकर।
मिले साथ सरगम सफ़र जिंदगी में-
खिले दिल ए गुलशन तेरा नाम लेकर।।

शरद रात पूनम सुखद चाँदनी तुम।
भले राग मैं हूँ मगर रागिनी तुम
बही है सदा प्रेम सरिता की धारा-
बनाते हो हर पल इसे पावनी तुम।

मेरे मन की वीणा की झंकार हो तुम,
मेरे गीत गजलों की फ़नकार हो तुम।
प्रथम बूँद प्यासा पपीहा पतंगा-
बरसता है सावन वही प्यार हो तुम।।

रुधिर रक्तिम कणिका का संसार हो तुम।
हृदय धमनी फुफ्फुस में संचार हो तुम।।
बिना जल जीवित कोई झष रह सके क्या -
वही प्रेमाधारों का रसधार हो तुम।।

© सुशांत कुमार पाठक

श्री मुन्ना राम मेघवाल

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री रामदेव भाटी।**
- **माता का नाम : श्रीमती जड़ाव देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक प्रशिक्षित।**
- **संप्रति : शिक्षक, लेखक एवं कवि ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०१९ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. अपनों की बात।
2. युवाओं की शक्ति।
3. कुंभ में शाही स्नान।
4. सुरभित मन।
5. हंसी लम्हें।

निवास स्थान

- **जिला : कोलिया डीडवाना।**
- **राज्य : राजस्थान।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

लौट आयेगा मेरा प्यार

जब से तुम गये हो,
दिल मेरा बैचेन है ।
ना रातों को चैन है,
ना दिन मे आराम है ।।

बातों ही बातों मे नाराज हो गया,
मानो नदी का जल खारा हो गया।
तेरी यादों का सहारा रह गया,
मन्नू सारा जहाँ बेग़ाना हो गया।।

क्या अपनो का बुरा मानना,
क्या अपनो की बातों का ।
मन्नू खता हो तो माफ करना,
छोड़ ना़राजगी,जल्दी घर आना।।

मन्नू हम करने स्वागत आपका,
तेरी राह मे पलके बिछाएं बैठे है।
वो लौट आयेगा प्यार हमारा,
हम फूलो का हार लिए बैठे है।।

© मुन्ना राम मेघवाल

मेरे ख़्वाबों को परवाज़ मिले

सदैव हँसती और हँसाती रहो,
नवनित दुधो नहाओं पुतों फलो।
मन्नू तेरी बगीया में नव पुष्प खिले,
माँ गौरी से अमर सुहागन आशीष मिले।।

मेरे सरगम को तेरी राग मिले,
मेरे ख्वाबो को परवाज़ मिले।
तेरे आँचल को ना दाग लगे,
तेरे चरण रज़ को सत्कार मिले।।

कद़म पड़े तेरे जिस आँगन में,
सदा खुशियों से महकता रहे।
तेरे त्याग,तप से फूले फलै,
तुम्हे सदा सुहाग का साथ मिलै।।

निशदिन मान सम्मान बढ़ता रहे,
ना तेरे स्वाभिमान को ठेस लगै।
नाग घुमते यूं हर घर आँगन में,
ना तुमको कभी वो डस पायै ।।

नवनीत बैल यूं बढ़ती रहे,
चंद्रनिशा संग खिलती रहे।
मेरे संग आजीवन तेरा साथ रहे ,
मन्नू मेरे हाथो में तेरा हाथ रहे ।।

© मुन्ना राम मेघवाल

नारी सदा प्यार चाहती है

एक स्त्री पुरुष को समझती है,
जब आँखो मे उसके प्यार देखती है।
अपने अरमानो की आश देखती है,
मुरझाये चेहरे के पिछे त्याग देखती है।।

वो उसमे अपना अक्स ढुढ़ती है,
अपने सम्मान की थाह नापती है।
उसमे मर्यादा की सीमा खोजती है,
अम्बर से ऊपर स्वाभिमान देखती है।।

जो उसके प्यार मे समर्पण करे,
पलको से उसका सत्कार करै।
देने को भले ही कुछ ना हो,
जो नारी का सदैव आदर करै।।

घर मे चाहे कितनी तकरार करै,
बाहर किसी से ना वो बात करै।
संकट मे पल पल साथ रहै,
मन्नू लेके हाथो मे हाथ चले ।।

© मुन्ना राम मेघवाल

श्रीमती सोनिया सरीन साहिबा

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री गुरुबचन सिंह डोगरा जी।**
- **माता का नाम : स्व. सुमन लता जी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : एम.ए (हिन्दी), एम.ए (राजनीति विज्ञान), एम एस डब्ल्यू (सोशलवर्क), पोस्ट ग्रेजुऐट डिप्लोमा होल्डर इन साइको न्यूरॉयूरॉबिक्स एन्ड मेमोरी डेवलपमेंट।**
- **संप्रति : शिक्षिका (PGT), लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष १९९४ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. माँ।
2. अजीब इत्तेफ़ाक है।
3. ओ रे बेरी घन।
4. अजब दौर।
5. जागो हे महामाया इत्यादि।

निवास स्थान

- **जिला : दिल्ली।**
- **राज्य : नई दिल्ली।**

प्रथम प्रेम

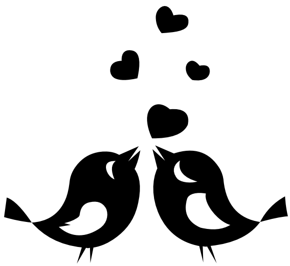

कोई आया और ठहर गया दिल में मेरे,
मुस्कुरा के कह गया, वो कुछ कान में मेरे।
रंग गया वो अपने ही रंग में इस तरह,
अपनेपन से बुन गया हर ख्वाब वो मेरे।

है वजूद उसका अब हर लम्हे में शामिल,
बस गई उसकी झलक इन आंखों में मेरे।
मीठी लगती हर बात उसकी मुझको हर वक़्त,
न जाने कौन से तार वो मन के सध गया है मेरे।

दिन रात उसका ही जादू अब सिर चढ़ के है बोले,
अनजाना हो के भी हमराज बन गया वो रे।
उसके बिन जीना अब गँवारा नही मेरे दिल को,
धीरे धीरे दिल पर हकूमत कर रहा है वो मेरे।

© सोनिया सरीन (साहिबा)

इश्क हो जाए

पता नहीं कब किसी को इश्क हो जाए,
छिड़ जाए तार दिलों के, निगाहें मिल जाए ।
है बहुत भीड़ जमाने में, सम्भल कर चलना ,
अजब है रोग ये तुमको, कहीं ना लग जाए।

सुना है मैंने कि आगाज, इसका होता हसीन,
पर अंजाम–ए–इश्क में आशिक फ़ना भी हो जाए।
दिल धड़कता है दीदारे यार के लिए, तो धड़कने दो इसे,
आहिस्ता आहिस्ता इसका जादू, यूँ बढ़ता ही जाए।

हीर- रांझे के फसाने, आज है आम हुए,
देखो अंजुमन में इशारा, कहीं तुम पर ना हो जाए ।
मेरे गुस्ताख दिल का जायजा, करने आए हो जनाब,
दिलकशी़ में देखो तोहमते कहीं न लग जाए ।

चलो अब है कबूल हमको सजा मुकर्रर कर दो,
पर शातिर निगाहों से बचना, कहीं कत्ल ना हो जाए।
चलते-चलते गुनाह अपने मैंने है मान लिए ,
पर रहम करना कहीं साहिबा, कसूरवार ना हो जाए।

© सोनिया सरीन (साहिबा)

तेरी बेरुखी

तेरी बेरुखी ओ जाने जा, मुझे जख्म दिल पर कई दे गई।
तू मसरूफ रहा बहारों में, मेरी दुनिया विरानी हो गई ।।

तू हंसता रहा गैरों से मिल, हम इंतजार में रोते रहे।
तेरा झूठा रुतबा बढ़ता गया, हम सच्ची मोहब्बत खोते रहे।।

है गिला मुझे बस इतना ही, क्यों सितमगर तू बन गया।
कांपा नहीं क्यों दिल तेरा, जो तू मेरे दिल से खेल गया।।

तेरे सपने बहुत ही महंगे थे, मेरा प्यार जो ठुकरा दिया।
आना न तू अब सामने, है तुझको खुदा का वास्ता।।

तुझे इल्म था मेरे दर्द का, पर बेपरवाह तू हो गया।
तेरी चौखट पर हमनें सजदे किए,फिर भी तू बेवफा हो गया।।

हम जीती बाजी हार बैठे है, ऐसा दिया है सबक तूने।
है इल्तिजा बस इतनी सी, करना न दिल्लगी तू फिर किसी से।।

टूट बैठी हूँ पर बिखरी नहीं, जा तुझको हमनें भी भुला दिया।
'साहिबा' करेगी अब इश्क़ नहीं, इस इश्क ने हमको है रुला दिया।।

© सोनिया सरीन (साहिबा)

श्रीमती धरती शर्मा “धरी”

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री वसंतलाल पुरोहित।।
- माता का नाम : श्रीमती अंजना पुरोहित।
- पति का नाम : श्री हिरेन शर्मा।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर।
- संप्रति : शिक्षिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २००२ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. माँ।
2. प्रभु श्री राम।
3. नारी।
4. उतरण।
5. खत।

निवास स्थान

- जिला : कच्छ।
- राज्य : गुजरात।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

हर साँस तुमसे जुड़ी है

हर साँस तुमसे जुड़ी है मेरी,
और रूह तुझसे जुडी है,
क्या बताऊँ किस तरह तु,
मेरी जिंदगी बन गई है,

देखा करते हैं लोग सुबह,
रब को हथेली में,
अक्सर मेंने तुमको ही देखा,
हथेली की लकीरों में,

जब भी आंख खुले तेरा ही,
चहेरा आंखोंने देखा,
देखकर तेरा चहेरा होठोंने,
जैसे मुस्कुराना सीखा,

अब तो जैसे आदत ही,
बन गई हो तुम,
खयालो में भी अक्सर,
खयाल भी तुम्हारे होते हैं,

जिना भी गंवारा नहीं,
अब तो तुम बिन,
अब तो आदत बन गई हो,
और जरूरत भी।

© धरती शर्मा "धरी "

यादों का गुलाब

क्या किस्मत पाई इन किताबों ने,
रखा हे अभी भी सीने से लगाए हुए ।

जिन हाथों ने दिया था फूल गुलाब का,
महेक भी उन हाथोंकी संभाले रखी है ।

मुझसे ज्यादा किस्मत पाई इन किताबों ने,
सीमत रखी उनकी यादो को गुलाबों में ।

था रिश्ता हम दोनों का प्यार भरा,
और दुश्मन था जमाना हमारी दोस्ती का।

कुछ लोग थे अपने जो हमे जुदा करना चाहते थे,
कुछ लोग हमारी दोस्ती की दुहाई दिया करते थे ।

बरकरार है आज भी वो प्यार,
बरकरार है आज भी वो एहसास ।

घंटों बैठे रहते थे लेकर हाथों में हाथ,
आज भी हो रहा है उनके छूने का एहसास ।

दर्द मुझे होता था ऑसू वो बहा रही थी,
खुद से भी ज्यादा वो मुझे प्यार करती थी ।

आज भी दिल उन पलों को याद कर तडपता है,
आज भी उनके प्यार में ये दिल धडकता है।

© धरती शर्मा "धरी "

काश कोई होता...

काश! काश कोई होता जो बिन कहे सब समझ जाता,
काश! कोई होता जो मुझसे ज्यादा मुझे जानता।
काश! काश कोई होता...

काश! काश वो मेरी मुस्कान की गहराई को नापता,
काश! कहकर चले गए हैं सब कंधे पे हाथ रखता।
काश! काश कोई होता ....

काश! काश वो कहता दुनिया को जो भी दिखा,
आंसू किनारे के मुझसे छिपा नहीं सकता।
काश! काश कोई होता......

काश! काश वो मेरे भीतर के तुफान को समझता,
काश ! मैं हूं ना कहकर वो मुझे गले लगाता।
काश! काश कोई होता.....।

काश! काश कोई होता जो मुझसे बहुत प्यार करता,
काश ! मेरे दर्द को वो अपना समझता।
काश! काश कोई होता...।

© धरती शर्मा "धरी "

अब्दुल रहमान बाँदवी

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. अब्दुल अज़ीज खान।**
- **माता का नाम : किस्मतुन्निशां।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर (अभियांत्रिकी)**
- **संप्रति : लेखक एवं कवि।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२० से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. **चल क़लम।**
2. **रंग-ए-जिंदगी।**
3. **हिंदुस्तान हैं सबसे अच्छा।**
4. **माँ का आँचल।**
5. **पिता को भी प्यार होता है।**
6. **अज़्मत-ए-वालिदैन।**
7. **कोरा कागज़ सा जीवन।**

निवास स्थान

- **जिला : बांदा।**
- **राज्य : उत्तर प्रदेश।**

हमसफ़र

शुरू हो गया अब ज़िन्दगी का सफ़र,
तुम बन गए हो मेरे हँसी हमसफ़र।

तुझसे शुरू हुआ, तुझपे ही ख़त्म होगा,
इतना छोटा रह गया जिंदगी का सफ़र।

इस सफ़र को अच्छे से बिताना हमसफ़र,
सुख-दुःख में जो साथ निभाये वो हमसफ़र।

कभी कोई गुरेज़ हो तो मुझसे बताना हमसफ़र,
लेकिन गर्द-ए-मलाल न रखना ऐ मेरे हमसफ़र।

भले ही छोटे-मोटे नोक झोंक करती है मगर,
हर पल जो साथ निभाती वो बीबी है हमसफ़र।

साथ रहने का कुछ ख़ास होना चाहिए असर,
एक-दूसरे को हम समझें व होना चाहिए क़दर।

ख़ुद में रखती है अपने अंदर फौलाद जैसा ज़िगर,
माँ बनकर हमें औलाद का सुख देती है वो हमसफ़र।

औलाद होते ही घर वालों में छा जाती हैं खुशियों की लहर,
आख़िर कितना महत्वपूर्ण योगदान देती है वो हमसफ़र।

सभी को एक-दूजे के हुक़ूक़ जानने व अमल करने का होना चाहिए हुनर,
"रहमान बाँदवी" जो हुक़ूक़-ए-ज़ौजिय्यत अदा करे वही है सच्चा हमसफ़र।

© अब्दुल रहमान "बाँदवी"

माँग लिया सांसार

तुम करते हो प्यार मुझसे तो करो न इकरार,
क्यूं किसी और के जरिए से करते हो इज़हार।

चलिए रिश्ते को आगे बढ़ाकर देते नया आकार,
प्रेम व विश्वास की खाद से करते इसका संचार।

मांग के साथ तुम्हारा मैंने ने मांग लिया संसार,
बस तुम मुझ पर रखना हमेशा ऐसा ही ऐतबार।

कोई भी शिकवा व गिला हो तो बताना मेरे यार,
पर अकेले यूं ही तुम मत परेशान होना बार बार।

क्योंकि अब हो अर्धांगनी हर खुशी करते हैं निसार,
तुम मेरे दिल का चैन, सुकून हो व दिल का करार।

हम दोनों होते हैं इक गृहस्थी के रथ के दो पहिए,
पहिए सही चले तो बेड़ा पार वरना जीवन बेकार।

मेरी ख्वाहिश है कि तेरी हर आरजू को पूरा करना,
फिर भी यदि कभी ध्यान न दे पाऊं तो मत होना बेजार।

बस तुम छोटी छोटी बातों को नजरंदाज कर बिताना सफ़र,
रहमान बांदवी इस जीस्त में लाएंगे इक दिन अच्छी बहार।

© अब्दुल रहमान "बाँदवी"

इश्क

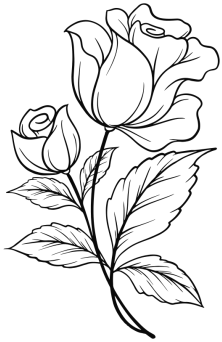

हैं सभी इश्क़ के आज़ार।
कोई ख़ुश है कोई बेज़ार।।

कोई जीवन इश्क़ में टूटा।
किसी को अपनों ने ही लूटा।।

जीवन मे रखो आशाएँ कम।
ख़ुश रहो दूर रहेगा ग़म ।।

क्या तेरा मेरा सब का काम ।
जीवन हो इंसानियत के नाम।।

सुनलो कान धरकर “रहमान बाँदवी”।
सच्चे इंसाँ की यही पहिचान।।

© अब्दुल रहमान "बाँदवी"

सुश्री पल्लवी श्रीवास्तव

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री संतोष श्रीवास्तव जी।**
- **माता का नाम : श्रीमती अनिता श्रीवास्तव।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक।**
- **संप्रति : लेखिका, कवयित्री एवं विद्यार्थी।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२४ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. गीता का सार
2. मुसाफिर हैं हम तो
3. बेख़ौफ़ वो वीर जवान
4. प्रकृति तेरे रुप अनेक
5. हिन्दी हमारी मातृभाषा
6. दहेज भगाओ बेटियाँ बचाओ
7. छू लूँ मैं आसमां
8. जुनून प्यार की एक अलग सीमा

निवास स्थान

- **जिला : पूर्वी चंपारण।**
- **राज्य : बिहार।**

प्रेम क्या है?

प्रेम अर्पण है, समर्पण है,
अनुशासन का दर्पण है।
जीवन का संचालन है,
प्रेम आज्ञा का पालन है।

प्रेम अनुरक्ति है
प्रेम ही विरक्ति है।
सबसे बड़ी शक्ति है।
प्रेम ईश्वर भक्ति है।

प्रेम बिन सब आधा है
कृष्ण बने राधा है।
प्रेम में संयोग है,
प्रेम में वियोग है।

प्रेम आरती है स्तुति है।
अरदास की प्रस्तुति है।
घण्टा ध्वनि गुंजान है,
प्रेम भोर की अज़ान है।

प्रेम बिना सब अधूरा,
न भक्त न भगवान पूरा।
प्रेम में आनन्द है,
प्रेम सच्चिदानंद है।

© पल्लवी श्रीवास्तव

प्रेम

जब कविता लिखूं तेरी जुल्फों पर ,
तो शाम सी छा जाती है ।
जब कविता लिखूं तेरी आंखों पर ,
तो समंदर सी गहराई आती है ।

जब कविता लिखूं तेरे होंठों पर,
तो गुलाब की कली भी शर्मा जाती हैं।
जब कविता लिखूं तेरे दांतो पर,
तो बिजली सी चमक जाती है ।

जब कविता लिखूं तेरे चेहरे पर ,
तो चांदनी सी निखर जाती है।
जब कविता लिखूं तेरी चलने की अदा पर ,
तो नागिन सी लहर आ जाती है।

जब कविता लिखूं तेरी सांसों पर ,
तो फूलों की खुशबू सी महक जाती है ।
है कविता की शान तुझसे ही ,
कविता में यदि तेरा जिक्र न करूं ,
तो ये कविता पढ़ी भी नहीं जाती है ।

© पल्लवी श्रीवास्तव

प्रेम ही जीवन का आधार

प्रेम ही जीवन का आधार,
प्रेम नहीं तो फीका ये संसार।
जीवन का बस इतना ही सार,
आपस में हो स्नेह और प्यार।

प्रेम में राधा हुई थीं दीवानी,
कान्हा संग करती आनाकानी।
प्रेम में सीता अपना सुख हारी,
फिरी राम संग वन में मारी मारी।

प्रेम में सुध बुध खोकर मीरा,
विष का प्याला पी जाती है।
लाख जतन करता हर कोई ,
गिरिधर के ही गुण गाती है।

प्रेम में जोधा के, अकबर हारे,
महल के भीतर मंदिर बनवाए।
प्रेम में, धर्म के सब बंधन टूटे,
मुसलमान होकर मूर्ति पुजवाए।

प्रेम न जाने मजहब की लकीर,
प्रेम में खोए राजा पीर फ़कीर।
प्रेम से ही जागृत यह संसार है,
प्रेम नहीं तो जीवन बेकार है।

© पल्लवी श्रीवास्तव

मुस्कान

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री सरबजीत सिंह जी।**
- **माता का नाम : श्रीमती नीरु जी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर**
- **संप्रति : विद्यार्थी, लेखिका एवं कवयित्री ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२३ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. हिन्दी हैं हम।
2. साँवरे की बंसी।
3. मैं भी कलमकार मंच पर लेखन।

निवास स्थान

- **जिला : टांडा।**
- **राज्य : पंजाब।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

मिलन

जब तुझसे नज़रें मिली राह में,
एक पल में सदियाँ सिमट आईं चाह में।
तेरी मुस्कान की वो सौगात सी,
जैसे बहारों में बसी कोई बात सी।

चलते-चलते जब हाथ थाम लिया,
जैसे वक्त ने खुद को थाम लिया।
तेरी आँखों में जो सपना था,
वही तो मेरे दिल का अपना था।

हर पल का इंतज़ार अब ख़त्म हुआ,
मिलन का ये सुखद क्षण कर्म हुआ।
तेरे साथ अब हर मोड़ आसान है,
जैसे जीवन कोई मीठा गान है।

© मुस्कान

आशंका

तेरी बातों में वो मिठास तो है,
पर न जाने दिल क्यों उदास तो है।
हर लम्हा तेरे प्यार में भीगा है,
फिर भी कुछ खोने का डर बाकी सा है।

तेरी आँखों में सच्चाई दिखती है,
तेरी साँसों में रूह तक बसती है।
फिर भी ये दिल धड़क कर पूछता है,
कहीं ये ख़्वाब अधूरा तो नहीं रह जाएगा?

तेरे वादों पर ऐतबार है मुझे,
तेरे साथ चलने को तैयार है ये रूह।
पर वक़्त की चालों से अनजान नहीं,
कभी-कभी प्यार भी इम्तिहान नहीं?

कहीं तुम दूर न हो जाओ किसी रोज़,
कहीं ये साथ न हो सिर्फ़ एक मोड़।
इसी सोच में भीगती रहती है नज़र,
तेरे प्यार में बसी है फिर भी ये डर।

फिर भी हर बार खुद को समझाती हूँ,
तेरे होने से ही खुद को पाती हूँ।
आशंका हो या हो अंधेरा घना,
तेरे प्यार में हर डर भी लगे अपना।

© मुस्कान

श्री मनोज मंजुल

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. श्री राम प्रकाश गुप्ता।**
- **माता का नाम : स्व. श्रीमती सरला देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक एवं बीएड।**
- **संप्रति : प्राध्यापक, लेखक एवं कवि।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष 2003 से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. माँ का आँचल।
2. साँवरे की बंसी।
3. गुरुचरणाम्बुज।
4. प्रीत की डोर।

निवास स्थान

- **जिला : कासगंज।**
- **राज्य : उत्तर प्रदेश।**

तुझे क्या मिला

तुझे क्या मिला है जालिम मुझे बेकरार करके।
कटी राते जिंदगी की तेरा इंतजार करके।।

जिस तीर की वजह से मैं बचा रहा था दिल को।
वही तीर तूने छोड़ा मेरे दिल के पार करके।।

मैंने तुमसे की मोहब्बत और तुमने बेवफाई।
कई जख्म खाए दिल पर तेरा एतबार करके।।

तड़पाया तूने ऐसे जल मीन बिन हो जैसे।
कहीं दम निकल ना जाए तेरा इंतजार करके।।

अब क्या करोगे मंजुल इस टूटी जिंदगी से।
बस खाक में मिला दो मेरे यार प्यार करके।।

तुझे क्या मिला है जालिम मुझे बेकरार करके।
कटी रातें जिंदगी की तेरा इंतजार करके।।

© मनोज मंजुल

आते हैं नए लोग ...

जो बीत गए हैं वह जमाने नहीं आते।
आते हैं नए लोग पुराने नहीं आते।।

यह इश्क की सीढ़ी है जरा सोच कर चढ़िए
उड़ते हैं तो फिर होश ठिकाने नहीं आते।।
आते हैं नए लोग ---------

समिधा के घरों में चिरागों को ना रखिए।
फिर आग पड़ोसी भी बुझाने नहीं आते।।
आते हैं नए लोग ---------

उस वृक्ष की छांव में बसेरा है हमारा।
जहां पंछी भी रात बिताने नहीं आते।।
आते हैं नए लोग ---------

उजड़ी हुई बस्ती का खंडहर हूं मंजुल
जहां बच्चे भी शोर मचाने नहीं आते।
आते हैं नए लोग ---------

© मनोज मंजुल

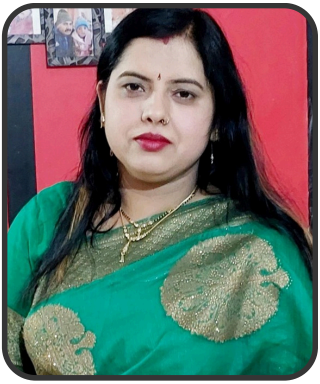

श्रीमती विभूति सिंह "विख्यात"

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री कमल कुमार।
- माता का नाम : स्व. वंदना देवी।
- पति का नाम : श्री आशुतोष कुमार।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।
- संप्रति : लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२० से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. जिन्दगी।
2. बीता वक्त।
3. माँ के जैसा प्यार।
4. मैं नारी हूं।
5. आतंकी हमला।

निवास स्थान

- जिला : ऊधम सिंह नगर।
- राज्य : उत्तराखंड।

उनसे इश्क़ करके

उनसे इश्क करके, उन्हीं से छुपाना,
कितना मुश्किल है, अनजान बन जाना।

नजरे मिलते ही नजरे चुरा लेना,
अपने जज्बातों को मन में दबा लेना,

उनको देखने के लिए घंटों इंतजार करना,
और सामने से वो आ जाए तो गैर बन जाना।

दिन रात उनकी खैरियत की दुआ मांगना,
आसान नहीं होता एक तरफा प्यार करना।

हाथों की मेहंदी में उनका नाम सजाना,
महफिल में जो कोई ले ले उनका नाम ,तो कतरा जाना।

ये जानते हुए कि वो मेरे हो नहीं सकते,
उनके इश्क में एक उम्र बिताना।
कितना मुश्किल है अनजान बन जाना।

© विभूति सिंह "विख्यात"

मेरे जीवन में समाये हो तुम

आँखो में काजल से समाये हो तुम,
बड़े नसीबों से मेरी दुनिया में आए हो तुम।

चूड़ी की खनखन में समाये हो तुम,
हाथों की मेहंदी में उतर आए हो तुम।

मेरे होठों की मुस्कान हो तुम,
चेहरे की चमक में समाये हो तुम।

जुल्फों की लटों में उलझे हुए हो तुम,
गजरे की खुशबू में महके हो तुम।

गले में सजे हार की चमक हो तुम,
पायल की रुन - झुन में समाये हो तुम।

मेरी माँग में चाँद, सितारे सजाए हो तुम,
प्रेम की चुनर ओढ़ा कर, अपने जीवन में लाए हो तुम।

© विभूति सिंह "विख्यात"

तेरा मेरा साथ

तेरा मेरा साथ हो,
गेरुआ आकाश हो,
हाथों में तेरा हाथ हो,
जीवन भर का साथ हो।

मौसम का मिजाज भी,
थोड़ा सा आशिकाना हो ,
तेरे दिल में रहूं मैं, और
मेरे दिल में तेरा आशियाना हो।

तेरी रेशमी जुल्फें,
मेरे कंधे पर करती हो अठखेलियां ,
आंखें तेरी मुझ से पूछे,
कुछ सरल सी पहेलियां।

यूं ही कुछ रंगीन शामें,
संग तुम्हारे बीते ,
कट जाए ये जीवन सारा,
गीत मिलन के गाते गाते।

© विभूति सिंह “विख्यात”

श्रीमती कविता सिंह "सृजना"

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री जियालाल सिंह।
- माता का नाम : श्रीमती राज रानी सिंह।
- पति का नाम : श्री पवन कुमार पटेल।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।
- संप्रति : अध्यापिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२३ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. स्त्री का आत्म संवाद।
2. हिंदी मेरी पहचान है।
3. नदी बहती रही।
4. पढ़ी लिखी बेटी।
5. रोशनी घर की (पढ़े बेटियां बढ़े बेटियां)।

निवास स्थान

- जिला : चित्रकूट।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

हाय ! मुझे इश्क़ हुआ

हाय ! मुझे इश्क हुआ इस कदर हुआ।
दिल जान रूह से बेखबर हो गई।।
उसकी पहली नजर में क्या जादू हुआ।
दिल दुनियादारी से बेकाबू हो गया।।

उसका देखना मुस्कुराना आंखों से यूं खेलना।
मेरे दिल को एक कशमकश में डाल गया।।
सोचती रही क्या हुआ है मुझे ?
एक अलग ही नशा छा गया है मुझमें ।।

हाय ये इश्क ने तो मुझे बदनाम कर डाला।
दिल जान अपने प्यार के नाम कर डाला ।।
अब तो बस एक ही तमन्ना है।
अपने यार के बाहों में जीना मरना है।।

कहते हैं लोग इश्क एक आग का दरिया है।
इसमें डूब कर जाना है ।।
मैं भी इस आग में जलना, दरिया में डूबना चाहती हूँ।
बस एक अच्छा सच्चा महबूब चाहती हूँ।।

© कविता सिंह “सृजना”

मेरी – तुम्हारी

सीने से लगकर तुमसे,
बस इतना ही कहना है।
जिंदगी भर अब तुम्हें,
अपनी बाहों में रखना है।।

साँसों में तुम बसे हो,
दिल पर लिखा तेरा नाम।
खुश हूँ अगर आज तो,
ये है तेरा एहसान।।

आँखो में हरपल तेरी ही,
दिखती है एक तस्वीर।
दिल और दिमाग पर मेरे,
बस तुम छाएँ हुए हो।।

भूलकर भी छोड़ने का मुझे,
इरादा मत करना कभी तुम।
वरना मेरी मौत का तुम्हें।
मिल जायेगा जल्दी पैग़ाम।।

देख सकता नहीं मैं तुझे,
किसी और के बाहों में।
क्योंकि ये दिल तेरे बिना।
कही और लगता ही नही।।

हर सांसो पर तेरा जो।
अब नाम लिखा गया।
जीती और मारती हूँ बस।
अब मैं सिर्फ तेरे लिए।।

जीवन का रस पान किये
तुम जो मेरे संग।
हर अंग पर लिखा है
तब ही से तेरा नाम।।

© कविता सिंह “सृजना”

प्यार जताने का तरीका

प्यार जताने का सबसे खूबसूरत तरीका ।
किसी को गले से लगाना ।।
जब भी हमें कोई गले से लगाता है ।
दो दिलों का धड़कना सुनाई दे जाता है ।।

तब रोशनी नहीं रहती हवाओं को आराम रहता है ।
मुझे लगता है खुदा वक्त को भी थाम देता है ।।
एक दूजे में हम ऐसे खो जाते हैं ।
नदियों सा मिलते ही सागर हो जाते हैं ।।

उस पल मेरे बाहों में सारा जहां होता है ।
फिर फर्क नहीं पड़ता कौन कहां होता है ।।
फिर मैं घर आता हूँ तब और दहकता हूँ ।
जब महबूब की खुशबू में मैं महकता हूँ ।।

तुझको मेरे संग ऐसे ही रहना है।
और आखिर में बस इतना ही कहना है ।।
रंगों में डूब कर भी हर किरदार सादा है ।।
जब तक गले ना लगाओ हर इंसान आधा है ।।

© कविता सिंह "सृजना"

श्री राकेश कुमार दास

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री दीनानाथ जी।**
- **माता का नाम : श्रीमती शिवदुलारी देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।**
- **संप्रति : शिक्षक, लेखक एवं कवि ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०१९ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. **जिदंगी ।**
2. **पुरानी किताब।**
3. **रात की कालिमा धूल रही है।**
4. **गुम है।**
5. **मैं भी कलमकार मंच पर लेखन।**

निवास स्थान

- **जिला : कामरुप।**
- **राज्य : असम।**

इश्क़ करके

जबसे इश्क़ हुआ है उनसे,
मेरे दिल पर,
इक सुरुर - सा छाया है ।
सूने से इस ज़िन्दगी में,
लगता है फिर से बहार आया है।
देखा है जबसे उसको,
वो अपनी- अपनी सी लगती है ।
इस दिल में,
बस उसकी ही तस्वीर है ,
वो ही इस दिल में बसती है ,
हाँ, बस वो ही इस दिल में बसती है।
काश ! मैं भी बन जाऊँ उसके लिए,
रांझा, महिवाल, परवाना में से कोई एक,
दिल में ऐसी ख़्वाहिश जगी है।
मेरी इस हालत को देख,
मित्र मेरे हैरान हैं !
और थोड़े परेशान भी,
क्या था मैं और क्या बन गया हूँ ?
उनसे इश्क़ करके।
पर कैसे इन्हें समझाऊँ,
कि इश्क़ क्या है ?
इश्क़ एक नशा है,
इश्क़ एक जुनून है,
इश्क़ हम जैसे
प्यार करने वालों के लिए सुकून है।
यह सब कुछ जान सका मैं,
केवल और केवल,
उनसे इश्क़ करके।

© राकेश कुमार दास

प्रेम के रंग में रंगे रहो

जीवन का क्या है ?
आना और जाना है ,
प्रेम जीवन का खजाना है ,
इसीलिए तो कहता हूँ ,
मित्रों ! प्रेम के रंग में रंगे रहो ।
यह प्रेम ही है लोक और परलोक का सहारा ,
प्रेम के रंग में रंग लो जीवन सारा ।
साफ़ कर लो अपने मन को,
प्रेम में न दाग हो ,
अगर थोड़ा भी मन की आँखों में पाप आएगा ,
चारित्र छोटा हो जाएगा ।
प्रेम रंग में घोलकर ख़ुद को,
इक नया रूप धरो ।
करे न कोई संशय तुम पर !
प्रेम का वो मिसाल बनो ,
प्रेम के रंग में रंगे रहो।

© राकेश कुमार दास

आज फिर तेरी याद आई है

आज फिर तेरी याद आई है ,
यादों की बदरी ,
दिलों दिमाग पर छाई है ।
मानों , आज भी तू और तेरी खुशबू
मेरे साँसों में समाई है ।
तेरे आने की आहट,
तेरे जाने की सन्नाहट,
एक बार फिर वैसे ही एहसास को जगाई है ।
आज फिर तेरी याद आई है,
इसके आने से मानो दूर हुई तन्हाई है ,
तू न सही ,
पर मेरे दिल पर तेरी यादों की परछाई छाई है ।
झूठ ही सही,
पर कुछ समय के लिए,
सच दिल को सुकून आई है।

© राकेश कुमार दास

श्रीमती संध्या गुप्ता

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री मोहन गुप्ता।
- माता का नाम : श्रीमती मधु गुप्ता।
- पति का नाम : श्री राहुल बंसल।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।
- संप्रति : अध्यापिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०२२ से सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :

1. माँ का आँचल।
2. साँवरे की बंसी।
3. प्रीत की डोर।
4. शब्दों की महक।
5. रामोत्सव : राम अवध में।

निवास स्थान

- जिला : गुरुग्राम।
- राज्य : हरियाणा।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

मन का मीत

मांगे बिन मिला मुझे,
मेरे मन का मीत।
मैं मन से पूरी करूँ,
प्रीत की हर रीत।

रीत प्रीत की ऐसी है,
जो लेती जग जीत।
साथ रहे सजना सदा,
बनके मेरा मीत।

वार दिया अब मन प्रिये,
मान लिए मनमीत।
हार गए या जीत है,
हम समझें बस प्रीत।

© संध्या गुप्ता

मुक्तक

मुझे रखना बसाकर तुम,
सदा अपनी निगाहों में।
कटे ये जिंदगी सारी,
तुम्हारी ही पनाहों में।

खुदा से माँग कर पाया,
दुआओं में तुझे हरदम।
कभी भी छोड़ मत जाना,
अकेले बेच राहों में।।

ख्वाब में भी कभी, तुम सताना नहीं।
हाल जो भी रहे, आज़माना नहीं।
है कठिन ये डगर, जिंदगी की बड़ी।
यूँ अकेले हमें छोड़ जाना नहीं।

© संध्या गुप्ता

तेरे नाम की मेहंदी

तेरे नाम की मेहंदी को,
हाथों में अपने सजाऊँ।
लाल रंग का देखो चूड़ा,
मैं पहनूँ और खनकाऊँ।

रब ने जोड़ा है जो बंधन,
आखरी साँस तक निभाऊँ।
ख्वाब जो देखे हैं तुमने,
पलकों पे अपनी सजाऊँ।

तेरे प्रेम की सरगम को,
इन साँसों में गुनगुनाऊँ।
दुआ मैं माँगू रब से यही,
दुनिया से सुहागन जाऊँ।

© संध्या गुप्ता

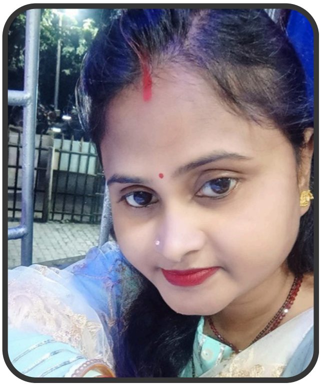

श्रीमती सरिता गुप्ता

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : स्व. केदार प्रसाद रविदास।**
- **माता का नाम : श्रीमती आशा देवी।**
- **पति का नाम : श्री भूषण कुमार गुप्ता।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातक (वाणिज्य)।**
- **संप्रति : अध्यापिका, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष 2018 से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. अपनों की बात।
2. व्यंजन वर्ण के अक्षरों से बनी शब्दों की रेलगाड़ी।
3. आँखें।
4. मैं भी कलमकार मंच पर लेखन।

निवास स्थान

- **जिला : कामरूप।**
- **राज्य : असम।**

मन का मीत

मैं और मेरी तन्हाई,
अक्सर ख्वाबों में तुझे ही..
याद किया करती है।

मैं और मेरी परछाई,
अक्सर राहों में तेरा ही....
साथ ढूंढा करती है।

मैं और तेरी अधूरी बातें,
अक्सर तुझसे ही.....
अपनी बातें पूरी करना चाहती है।

मैं और तेरी यादें,
अक्सर तेरा ही....
साथ चाहती है।

© सरिता गुप्ता

बेवफ़ाई

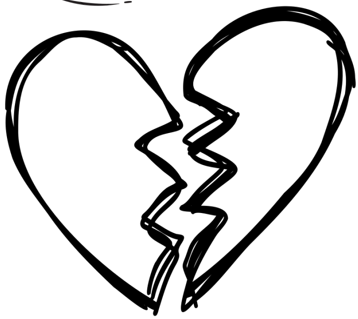

वफ़ा तुमने भी बेशुमार की थी,
बेवफ़ाई मैंने भी तो ना की थी,
उम्मीदें मुझसे तुम्हें भी बहुत थी,
हो इक छोटा सा आशियाना,
ये उम्मीद मैंने तुमसे ही रखी थी।

फिर जिंदगी में तुम्हारे,
ऐसा कौन सा मोड़ आया ?
जो अपनी ही ख्वाहिश को तुमने,
रास्ते में अकेला छोड़,
मौत के हवाले कर दिया।

© सरिता गुप्ता

काश एक बार

काश एक बार मुड़कर,
मैंने उसे देखा होता,
क्या दिल में है उसके,
मैंने उससे पूछा होता।

यूँ पछतावे में.....
तिल तिल कर मैं न मरता,
काश एक बार,
मैंने उसे रोका होता।

थी धोखेबाज वो,
या मतलबी मैं निकला ?
काश मैं ना उससे,
यूँ जाकर मिला होता।

बस एक क्यूँ ने मुझे,
अंदर तक तोड़ कर रख दिया
काश मैंने उसे मुड़कर,
एक बार देखा होता।

© सरिता गुप्ता

डॉ बी. एल. सैनी

स्वपरिचय

- **पिता का नाम : श्री मंगल चंद सैनी।**
- **माता का नाम : श्रीमती बनारसी देवी।**
- **शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर, एम. फिल एवं पीएच.डी।**
- **संप्रति : शिक्षक, लेखक, कवि एवं समाजसेवी ।**

साहित्यिक अनुभव

- **लेखन विधा : गद्य एवं पद्य दोनों।**
- **साहित्य में प्रवेश का वर्ष : वर्ष २०१९ से सक्रिय लेखन।**
- **प्रकाशित कृतियाँ :**

1. सहस्त्रों रचनाएँ विविध समूहों में प्रेषित एवं प्रकाशित है।
2. मैं भी कलमकार मंच पर दैनिक लेखन श्रृंखला में कई काव्य प्रकाशित।

निवास स्थान

- **जिला : सीकर।**
- **राज्य : राजस्थान।**

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

इश्क़ लिखा था मेरी तक़दीर में

इश्क़ लिखा था मेरी तक़दीर में, एक तुम थे,
तुम्हारी आँखों में बसा, वो ख्वाबों का समंदर था।
हमसे दूर सारा जहां था, पर तुम पास थे,
हमारी सच्चाई तो वो लम्हे थे, जो तुमसे प्यार था।

कभी सोचा न था, मेरी ज़िंदगी का राज़ तुम हो,
मेरे दिल की धड़कनें, तुम्हारी आवाज़ में सम हो।
तुमसे मिलने से पहले तो इश्क़ का अर्थ न था,
जब तुम मिले, तब ही समझा मैंने क्या था।

तुमसे जो प्यार किया, वो कभी किसी से न था,
इश्क़ में गुम हो गए, जैसे हम दो मिले न था।
तुम बिना, जीवन जैसे सूना सा लगता है,
तुमसे जुड़ा हर ख्वाब अब पूरा सा लगता है।

इश्क़ लिखा था मेरी तक़दीर में, तुम्हारा हाथ था,
कभी न खोने वाला, यही मेरा विश्वास था।
तुम हो मेरी तक़दीर, मेरी पहचान, मेरा इश्क़,
मेरे हर कदम में बस तुम हो, यही सच है, यही चाह है।

© डॉ बी. एल. सैनी

ख्वाबों में तेरा शहर

ख्वाबों में तेरा शहर हर रोज़ बसा करता है,
मेरे दिल की गलियों में हर पल तू दिखा करता है।
वहाँ रास्ते भी तेरे ही होते हैं, और इमारतें भी,
आकाश में तारे जैसे, तेरी आँखों की चमक होती है।

तेरे शहर के हर मोड़ पर, मेरी खामोशियां गाती हैं,
तेरे बिना हर एक छांव, बस ग़मों में डुबती हैं।
वहां की हवाओं में तेरी हँसी भी बसी रहती है,
मेरे ख्वाबों की राहों में तेरा नाम हर जगह रहती है।

जब भी सोता हूँ, वहाँ चला जाता हूँ मैं,
ख्वाबों में उस शहर में, तुझसे मिलता हूँ मैं।
वो शहर नहीं, एक एहसास है, जो मुझसे जुड़ा है,
ख्वाबों में तेरा शहर, मेरा प्यार उसमें सजा है।

तू वहाँ भी पास है, यहाँ भी दिल में बसा है,
तेरे बिना वो शहर खाली सा लगता है।
ख्वाबों में तेरा शहर, हर रात यही कहता है,
तू मेरा है, और मैं तेरा, यही सच है, यही रहता है।

© डॉ बी. एल. सैनी

तेरे खत अब भी महकते हैं

तेरे खत अब भी महकते हैं, जैसे गुलाब हो,
हर लफ़्ज़ में बसी है तू, जैसे कोई ख्वाब हो।
वो काग़ज़ नहीं, तेरे एहसास की चादर हैं,
जो छू लूं तो लगता है तू आस-पास है।

तेरे लिखे हर शब्द में जादू बसता है,
तेरी कलम से निकला प्यार आज भी हँसता है।
वो तारीख़ें, वो तर्ज़-ए-बयां, सब याद है,
हर लकीर में तेरा चेहरा आबाद है।

कितनी बार पढ़ा उन्हें रातों की तन्हाई में,
हर बार तू मिला मुझे उसकी गहराई में।
वो सिलवटें अब भी सजीव हो उठती हैं,
तेरी उंगलियों की छाप अब भी मिटती नहीं।

इश्क़ आज भी वही है, अल्फाज़ पुराने सही,
तेरे खतों में अब भी हैं जज़्बातों की स्याही कहीं।
तेरे खत अब भी महकते हैं, सांसों में ऐसे,
जैसे तू हो आसपास, और दुनिया थमे जैसे।

© डॉ बी. एल. सैनी

श्रीमती हरमिंदर कौर

स्वपरिचय

- पिता का नाम : श्री सरदार राम सिंह।
- माता का नाम : श्रीमती मंजीत कौर।
- पति का नाम : श्री धर्मेन्द्र सिंह।
- शैक्षणिक योग्यता : स्नातकोत्तर एवं बीएड।
- संप्रति : रिसर्चर, लेखिका, कवयित्री एवं गृहिणी।

साहित्यिक अनुभव

- लेखन विधा : पद्य एवं गद्य दोनों।
- साहित्य में प्रवेश का वर्ष : विद्यालय के दिनों से ही सक्रिय लेखन।
- प्रकाशित कृतियाँ :
  1. मैं कवि कैसे बना (सह संपादक)।
  2. साहित्य त्रिविधा।
  3. सफर ए हमरंग।
  4. साहित्यशाला।
  5. साहित्यनामा।

निवास स्थान

- जिला : अमरोहा।
- राज्य : उत्तर प्रदेश।

सत्यापन

आगामी रचनाएँ मेरे द्वारा स्वलिखित, मौलिक एवं अप्रकाशित कृतियाँ हैं जिन्हें स्वेच्छा से प्रकाशन के लिए प्रेषित किया गया है।

रुह के आसपास

इश्क की गलियों से गुज़रना अच्छा लगता है।
तेरे साथ पुरानी यादों में चलना अच्छा लगता है।।

दिल ठहर सा जाता है गलियों से गुजर ते वक्त।
धड़कनों पर काबू पाना अच्छा लगता।।

उम्र के उस दौर से गुजर रहे हैं जहाँ ख्वाहिशें खत्म होने लगती है।
लेकिन फिर भी उम्र का ठहर जाना अच्छा लगता है।।

तुझसे बड़ी शिद्दत से इश्क किया था मैंने।
आज भी इस रुह के आसपास तेरा होना नजर आता है।।

काफ़ी अरसा गुजर गया तेरा चेहरा देखे हुए
एक बार फिर तेरा दीदार करने को दिल चाहता है।।

एक बार फिर उन गलियों से गुजरने को दिल चाहता है।
नज़रें चुरा कर फिर तुझसे नजरे मिलाने को दिल चाहता है।।

© हरमिंदर कौर

तेरा मेरा रिश्ता

दिल बेचैन है !
साँसों में बसा लूँ तुझे।
छुपा के इस जहाँ से
मन में बसा लू तुझे।।

कोई कर्म ही अच्छा किया होगा,
जो इस जीवन में तू मिला।
अपने कर्मों पर तो,
ना यकी था मुझे।।

बेरंग जिन्दगी में,
इस कदर रंग भर दिया तुमने।
खोल कर नसीब की किताब,
देखना चाहती हूँ।।

शुरु- शुरु में कोई अंजान,
शख्स सा लगा था मुझे।
फिर धीरे -धीरे तेरी बाँहों का,
सहारा मिलने लगा था मुझे।।

प्यार की परिभाषा नहीं ,
पढ़ी थी मैंने पर फिर भी।
तुम्हे देखकर तुमसे अपनेपन का,
एहसास होने लगा था मुझे ।।

यूँ ही लोग शादी के रिश्ते,
पर उंगलियाँ उठाते हैं ।
इश्क होता नहीं उनमें,
अक्सर कहते सुने जाते है।।

मेरी तो रूह से साँसों तक,
बस तेरा ही नाम महकता है ।
जन्मांतर का तो पता नहीं,
पर यह जीवन बड़ा ही हसीन लगता है।।

इतना प्यारा होगा,
तेरा मेरा रिश्ता।
नजर न लग जाए इस रिश्ते को कहीं,
दुनिया से छुपाकर खुद में बसा लेना चाहती हूँ।

© हरमिंदर कौर

धन्यवाद

Mahakaal Ki Kripa Se
Sab Kaam Ho Raha Hai

साहित्य संगम बुक्स

स्टॉफ क्वार्टर ढोरी

फुसरो, बोकारो, झारखंड

संपर्क : 8935857296

www.sahityasangambooks.in

ISBN: 978-8-19732-636-3

9 788197 326363

मूल्य : ३९९/-